



# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“  
भिक्षु वाणी

जे कायर करें पचखाण, ते विकलाइ करें।  
त्यां जीतम जमम बिगाड़ियो।।

कायर आदमी जिस संकल्प को स्वीकार करता है उस वह तोड़ देता है। उसका जीवन बिगड़ जाता है।

—आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

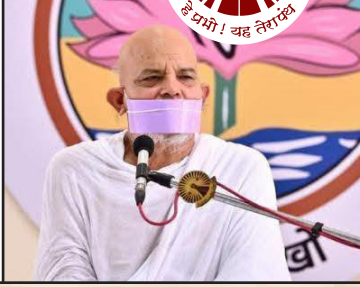
● वर्ष 27 ● अंक 38 ● 22 जून - 28 जून 2026



प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 20-06-2026 ● पेज 12 ● ₹ 10 रुपये



काया तो बुढ़ापे से कमजोर हो गई, पर भीतर की सांसारिक तृष्णा आज भी अमर है :  
आचार्यश्री महाश्रमण  
पेज 11



तीर भले चूक जाए, पर बेजुबान को मारने की नीयत मात्र से लग जाता है 'भाव हिंसा' का महापाप :  
आचार्यश्री महाश्रमण  
पेज 12

Address  
Here

## कामनाएँ ही मानसिक तनाव की असली जड़ हैं, इच्छाओं पर ब्रेक लगाना ही सच्ची साधना है : आचार्यश्री महाश्रमण

'समभाव से सहें वेदना' विषय पर युगप्रधान की देशना; — सत्पुरुषार्थ कभी खाली नहीं जाता, आज नहीं तो अगले जन्म में फल निश्चित

लाडनूँ।

17 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, शांतिदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती परिसर की सुधर्मा सभा में 'समभाव से सहें वेदना' विषय पर उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री ने आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी समस्या—तनाव, चिंता और बीमारी का तात्विक विश्लेषण करते हुए आंतरिक शांति बनाए रखने का कड़ा पाठ पढ़ाया।

**दुःख का मूल कारण:** जहाँ कामना-वहाँ दुःख — आचार्य प्रवर ने इंसानी मन की कमजोरियों और मानसिक व्यथा के अंतर्संबंधों को बेहद तीखे शब्दों में रेखांकित किया।



१. **इच्छाओं से जनित तनाव :** मनुष्य अपने मन में ढेरों कामनाएँ पाल लेता है, पर यह जरूरी नहीं कि हर इच्छा पूरी हो। कामना के टूटते ही मन में दुःख और तनाव का जन्म होता है। सीधा सिद्धांत है—'जहाँ कामना है, वहाँ दुःख निश्चित है।'

२. **व्याधि, आधि और उपाधि का भेद :** शरीर की बीमारियों को 'व्याधि', मन की चिंताओं व व्यथा को 'आधि' और

भावात्मक असंतुलन को 'उपाधि' कहा जाता है। यदि आत्मिक साधना पुष्ट नहीं है, तो इंसान छोटी-छोटी बातों को लेकर भय और अवसाद से घिर जाता है।

**वेदना सहने का विज्ञान :** समस्या निमित्त है, उपादान नहीं— शांतिदूत ने शारीरिक और मानसिक पीड़ा के समय आत्मा को स्थिर रखने का व्यावहारिक मार्ग बताया।

१. **बाहरी समस्या से भीतर क्यों**

”

शारीरिक व्याधि और मानसिक आधि को कर्म निर्जरा का माध्यम बनाए

—आचार्यश्री महाश्रमण

**अशांति ? :** डॉक्टर, अस्पताल, दवाइयों और इंजेक्शन शारीरिक व्याधि के कारण अनिवार्य हो सकते हैं, जो उम्र के किसी भी पड़ाव में आ सकते हैं। परंतु बाहरी समस्याएँ मानसिक दुःख में केवल 'निमित्त' (बाहरी कारण) बनती हैं, वे 'उपादान' (भीतरी कारण) नहीं हैं। यदि हमारा चिंतन प्रशस्त है और संतोष का आलंबन है, तो भीतर में आवेश और

मानसिक वेदना कभी प्रवेश नहीं कर सकती।

२. **कर्म निर्जरा का उत्तम माध्यम :** जीवन में आई किसी भी कठिन शारीरिक या मानसिक परिस्थिति को कोसने के बजाय उसे 'कर्म निर्जरा' का माध्यम मानकर समता भाव से सहन करने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

**विनय प्रतिपत्ति और आचार्य भिक्षु का अदम्य साहस—** पूज्य प्रवर ने आचरण की शुद्धता और संघ की मर्यादा को लेकर कड़े निर्देश दिए।

१. **बड़ों के उलाहने को सहें :** यदि जीवन में बड़े कुछ कड़ा कह दें या कोई उलाहना दे दें, तो भीतर में आवेश लाने के बजाय पूरी विनय प्रतिपत्ति (नम्रता) के साथ उसे सहजता से स्वीकार करना चाहिए। यही उत्कृष्ट भावना मोहनीय कर्म को कमजोर करती है। (शेष पेज 9 पर)

## बिना कैंची-उस्तरे के हाथों से केशलुंचन करना है सर्वोच्च तप : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूँ।

16 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती परिसर स्थित सुधर्मा सभा में 'केशलुंचन एक चिंतन' विषय पर पावन आगम देशना प्रदान की। पूज्य प्रवर ने साधु जीवन की तीन सबसे कठिन मर्यादाओं—कापोतीवृत्ति, केशलुंचन और घोर ब्रह्मचर्य व्रत का वैज्ञानिक व तात्विक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

**केशलोच का विज्ञान: कैंची या उस्तरे**

का प्रयोग जैन शासन में क्यों वर्जित?— आचार्य प्रवर ने हाथों से बाल उखाड़ने की इस दारुण परंपरा के पीछे छिपे अहिंसा के सूक्ष्म रहस्यों को खोला।

१. **सूक्ष्म जीवों की रक्षा :** मस्तक पर कैंची, रेजर या उस्तरे जैसे आधुनिक साधनों का उपयोग करने से बालों में छिपे सूक्ष्म जीवों (जैसे जूँ आदि) की हिंसा होने का भयंकर खतरा रहता है। हाथों से एक-एक बाल उखाड़ने पर पूर्ण अहिंसा का पालन सुनिश्चित हो जाता है।

२. **शस्त्रों का वर्जन :** जैन मुनि पूर्ण रूप से अहिंसा के पुजारी होते हैं, वे कैंची या उस्तरे जैसे तीखे लौकिक साधनों को



हाथ में क्यों लें? इसीलिए हाथों से ही लोच करने की विधा अनादि काल से चली आ रही है।

३. **काय-क्लेश तप और सहिष्णुता :** बाल सौंदर्य का प्रतीक (अलंकार) होते

”

कबूतर की तरह पल-पल पाप से डरें और भँवरे की तरह घरों से थोड़ी-थोड़ी भिक्षा ग्रहण करें साधक  
—आचार्यश्री महाश्रमण

हैं और साधक को किसी भी प्रकार के श्रृंगार की अनुमति नहीं होती। केशलुंचन की इस दारुण पीड़ा को समता भाव से सहना काय-क्लेश तप है, जो साधक के पौरुष को दर्शाता है। मुनि वर्ष में दो

बार (संवत्सरी से पूर्व अनिवार्य रूप से) मुंडित होते हैं।

**साधु चर्या की दो अन्य दुष्कर बातें :** कापोतीवृत्ति और घोर ब्रह्मचर्य — शांतिदूत ने आगम वाणियों के आलोक में साधक जीवन की दुर्गम कसौटियों को रेखांकित किया।

१. **कबूतर जैसी पापभीरुता :** जैसे कबूतर ज़मीन से अन्न का एक-एक दाना चुगते समय पल-पल सशंक और चौकन्ना रहता है, वैसे ही जैन मुनि को गोचरी (भिक्षा) लेते समय बेहद सावधान रहना चाहिए कि चर्या में कोई दोष या पाप न लग जाए। (शेष पेज 9 पर)

# जागरूकता के साथ बढ़ाए गए कदम ही धर्म हैं, लापरवाही से चलना तो अंधकार की ओर बढ़ना है : आचार्यश्री महाश्रमण

'उपयोगपूर्वक चलें' विषय पर युगप्रधान की देशना; —चलते समय सिर्फ चलना होना चाहिए, आवश्यक बात हो तो ठहर कर करें

लाडनूं।

14 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती की सुधर्मा सभा में 'उपयोगपूर्वक चलें' विषय पर आगम सम्मत पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री ने चेतना की एकाग्रता को मोक्ष मार्ग का आधार बताते हुए साधुओं के साथ-साथ गृहस्थों को भी दैनिक जीवन में पूर्ण जागरूक होकर चलने की कड़ी नसीहत दी।

**जैन विद्या का कड़ा सिद्धांत : साकार और अनाकार उपयोग के 12 भेद :** आचार्य प्रवर ने जीव के मुख्य लक्षण 'उपयोग' (चेतना की प्रवृत्ति) का गहरा दार्शनिक विवेचन किया।

**१. ज्ञान और दर्शन का भेद:** उपयोग के मुख्य रूप से दो भेद हैं— साकार (ज्ञान) और अनाकार (दर्शन)। पर्याय को ग्रहण करने के कारण ज्ञान साकार होता है। कुल मिलाकर उपयोग के 12 भेद शास्त्रों में बताए गए हैं।

**२. मिथ्यात्वी का अज्ञान :** जब



तक केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं हो जाती, तब तक ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से जनित अज्ञान किसी न किसी रूप में बना रहता है।

मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और विभंग अज्ञान—ये तीन अज्ञान मिथ्यात्वी जीव के पास होते हैं, इसलिए इन्हें अज्ञान की संज्ञा दी गई है।

**मार्ग में चलने का विज्ञान :** ४ प्रकार की यतना और कड़े नियम शांतिदूत ने आगम के अनुरूप सुरक्षित और संयमित विहार के लिए चार यतनाओं की व्याख्या की।

**१. द्रव्यतः और क्षेत्रतः यतना:**

आँखों का पूरा उपयोग करके नीचे देख-देखकर चलना 'द्रव्यतः यतना' है, जिससे मार्ग के जीव-जंतुओं की रक्षा हो सके। अपने शरीर के प्रमाण की भूमि को देख-देखकर कदम बढ़ाना 'क्षेत्रतः यतना' है।

**२. कालतः और भावतः यतना:** जब तक यात्रा चले, तब तक लगातार सजगता से देखना 'कालतः यतना' है और चलने की क्रिया में पूरी तरह एकाग्रचित्त (होश में) रहना 'भावतः यतना' है।

**३. मल्टीटास्किंग पर प्रहार :** चलते समय केवल चलने की क्रिया मुख्य होनी चाहिए। इधर-उधर देखना या

लापरवाह इंसान कदम-कदम पर जीव हिंसा का भागी बनता है  
—आचार्यश्री महाश्रमण

कान में कुछ सुनते हुए चलना आत्मा और शरीर दोनों के लिए घातक है। यदि कोई आवश्यक बात करनी हो, तो रास्ते में रुककर (ठहर कर) करनी चाहिए। चलते-चलते कुछ भी खाना या पीना पूरी तरह वर्जित होना चाहिए।

**४. ट्रैफिक नियमों का पालन :** आचार्यश्री ने विशेष निर्देश दिया कि विहार के समय आध्यात्मिक सजगता के साथ-साथ सड़क के ट्रैफिक नियमों का भी पूर्ण ईमानदारी से पालन किया जाना चाहिए।

**हाजरी वाचन, पुस्तक लोकार्पण और शिविर उपसंपदा :** सुधर्मा सभा में अध्यात्म और साहित्य के कई महत्वपूर्ण उपक्रम एक साथ संपन्न हुए।

**१. हाजरी और पांच कल्याणक बख्शीश :** चतुर्दशी के पावन प्रसंग पर पूज्य प्रवर ने मर्यादा पत्र (हाजरी) का वाचन कर चारित्रात्माओं को संयम की प्रेरणा दी।

आचार्यश्री की अनुज्ञा से साध्वी पद्मप्रभा जी ने लेखपत्र का उच्चारण किया, जिस पर प्रसन्न होकर आचार्य प्रवर ने उन्हें 'पांच कल्याणक' बख्शीश किए। इसके बाद सभी संतों-साध्वियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर मर्यादा लेखपत्र का सामूहिक उच्चारण किया।

**२. अंग्रेजी पुस्तक का लोकार्पण :** जैन विश्व भारती द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी की मूल कृति 'क्या कहता है जैन वाङ्मय' का साध्वी चारित्रयशा जी द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित ग्रंथ का पूज्य प्रवर के कर-कमलों द्वारा भव्य लोकार्पण किया गया।

**३. प्रेक्षाध्यान शिविर संपन्न :** लाडनूं में चल रहे विशेष प्रेक्षाध्यान शिविर के सभी देश-विदेश से आए संभागीयों को आचार्यश्री ने मंत्रोच्चार के साथ शिविर की 'उपसंपदा' (दीक्षा-सर्टिफिकेट) प्रदान कर आध्यात्मिक जीवन जीने का आशीर्वाद दिया।

# भले गला कट जाए पर जुबां से कभी झूठ न निकले, यही है सत्य की असली कसौटी : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में एकादशमाधिशास्ता का बोध; हंसी-मजाक, भय और लोभ को सत्य साधना का सबसे बड़ा बाधक बताया

लाडनूं।

15 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा परिसर में चतुर्विध धर्मसंघ को 'हित और सत्य बोलो' विषय पर पावन आगम पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री ने सत्य महाव्रत की सूक्ष्म व्याख्या करते हुए प्राणों की बाजी लगाकर भी झूठ का सर्वथा त्याग करने का संदेश दिया।

**सत्य की कठिन साधना : गला कट जाए पर झूठ मंजूर नहीं :** आचार्य प्रवर ने दूसरे महाव्रत 'सर्व मृषावाद विरमण' की महत्ता को अद्भुत और कड़े शब्दों में रेखांकित किया।

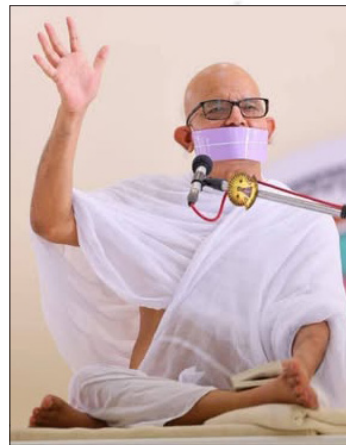
**१. करोड़ों की संपत्ति भी तुच्छ:** दीक्षा के समय साधु तीन करण और तीन योग से झूठ का सर्वथा त्याग करता

है। इस महाव्रत के सामने संसार की करोड़ों-अरबों की संपत्ति भी बेहद तुच्छ और नाकुछ सी है।

**२. अखंड अप्रमत्तता की कसौटी:** साधु जीवन में चाहे कितनी ही विकट परिस्थितियां या प्रलोभन आ जाएं, कभी भी झूठी बात न तो मुंह से बोलनी चाहिए और न ही कहीं लिखनी चाहिए। आदर्श स्थिति यही है कि साधक को 'गला कटवाना मंजूर हो, पर झूठ बोलना कभी मंजूर न हो।'

**३. होठों के दरवाजे रखें बंद :** सच्चाई की दृढ़ता के लिए आत्मा में सरलता, निर्लोभता, अभय और गंभीरता का होना अनिवार्य है। इंसान को अल्पभाषी होना चाहिए। हंसी-मजाक में अत्यधिक बहकने, क्रोध या लोभ के वशीभूत होने से सत्य खंडित होता है; अतः इन होंठ रूपी दरवाजों को हमेशा संयम से बंद रखना चाहिए।

**केश लुंचन के बदले चतुर्विध**



**संघ को बख्शीस :** आज सुधर्मा सभा में आचार्यश्री के मुखारविंद के लुंचन (केश लोचन) के पावन प्रसंग पर चतुर्विध संघ ने लुंचन की इस कठिन निर्जरा में सहभागी बनने की सविधि प्रार्थना की, जिस पर आचार्यप्रवर ने पूरे संघ को आध्यात्मिक प्रेरणा दी:

**१. साधु-साध्वी व समणी वर्ग :** एक सप्ताह तक प्रतिदिन आधा-आधा

संसार की अरबों की संपत्ति भी महाव्रत के आगे तिनके जैसी है  
—आचार्यश्री महाश्रमण

घंटे का विशेष आगम स्वाध्याय करेंगे।  
**२. मुमुक्षु वर्ग :** प्रतिदिन आधा घंटे का कोई भी धार्मिक-साहित्यिक स्वाध्याय संपन्न करेंगे।

**३. श्रावक-श्राविका वर्ग :** गृहस्थ समाज के सभी लोग इस एक सप्ताह के भीतर अनिवार्य रूप से ३ अतिरिक्त सामायिक पूर्ण करके इस महान निर्जरा के साक्षी बनेंगे। पूज्या साध्वी आशावती जी की स्मृति में चतुर्विध संघ ने किया ध्यान मंगल देशना के दौरान पूज्य प्रवर

आचार्यश्री की पावन सन्निधि में वैराग्यधनी साध्वी आशावती जी की स्मृति सभा का भावपूर्ण आयोजन हुआ।

**पूज्य प्रवर की श्रद्धांजलि:** आचार्यश्री ने साध्वी जी का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनकी आत्मा के प्रति मध्यस्थ भाव रखने की प्रेरणा दी। तदुपरान्त पूरे चतुर्विध धर्मसंघ के साथ मिलकर दिवंगत आत्मा के कल्याण हेतु 'चार लोगस्स' का सामूहिक कायोत्सर्ग ध्यान किया।

**भावनाओं की अभिव्यक्ति :** साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी, मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी सहित अनेक साधु-साध्वियों ने दिवंगत साध्वी जी के प्रति अपनी मध्यस्थ भावनाएं रखीं। संसार पक्षीय परिवार की ओर से हर्षा मरोठी, निर्मल भूरा, ईशा बैद, हंसराज भूरा तथा तेरापंथी सभा गंगाशहर की ओर से नवरतन मल बोथरा ने कृतज्ञता व्यक्त की।

## राष्ट्रव्यापी संगठन सुदृढीकरण का प्रयास

# अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल संगठन यात्रा 2026 सम्पन्न

### लाडनू।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन आशीर्वाद एवं कृपादृष्टि तथा साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी की प्रेरणा से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा अप्रैल एवं मई 2026 के दौरान देश एवं नेपाल की 465 शाखाओं की संगठन यात्रा सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। राष्ट्रीय

अध्यक्षा सुमन नाहटा के मार्गदर्शन में सम्पन्न यह संगठन यात्रा अभातेमम के संगठनात्मक इतिहास में एक उल्लेखनीय एवं सराहनीय प्रयास रही। व्यापक स्तर पर सम्पन्न इस अभियान ने शाखाओं के साथ प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करते हुए संगठन और शाखाओं के मध्य समन्वय एवं सहभागिता को नई सुदृढता प्रदान की। इस यात्रा के माध्यम से संगठन की

योजनाओं, उद्देश्यों एवं कार्यप्रणाली के प्रति जागरूकता का विस्तार हुआ तथा शाखाओं में सक्रियता, उत्तरदायित्व-बोध और संगठनात्मक प्रतिबद्धता को प्रोत्साहन मिला।

महिला शक्ति को संगठन से और अधिक सशक्त रूप से जोड़ने की दिशा में यह अभियान अत्यंत सार्थक सिद्ध हुआ। देश एवं नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों में सम्पन्न इस

संगठन यात्रा ने भावी कार्ययोजनाओं के लिए एक मजबूत आधार निर्मित किया। अभातेमम कार्यसमिति सदस्यों, विशेष आमंत्रित सदस्यों एवं शाखा पदाधिकारियों के समर्पण, सहयोग और सक्रिय सहभागिता से यह महाअभियान सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में अभातेमम की संगठन मंत्री निधि सेखानी का अथक श्रम, सतत

समन्वय एवं समर्पित प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा, जिन्होंने इस अभियान को सफलतापूर्वक पूर्णता तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल सभी सहयोगी बहनों के प्रति हार्दिक साधुवाद ज्ञापित करता है, जिनके सामूहिक प्रयासों से यह संगठन यात्रा सफलता के नए आयाम स्थापित कर सकी।

## TPF स्थापना दिवस पर राईज एण्ड शाइन कार्यशाला का आयोजन

### अहमदाबाद।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में TPF स्थापना दिवस पर राईज एण्ड शाइन वर्कशॉप का आयोजन मोटेश तेरापंथ भवन के विशाल एवं रमणीय हॉल में हुआ।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा - TPF तेरापंथ धर्मसंघ की उदीयमान संस्था है। परमश्रद्धास्पद आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के युग में बीज बोया गया। उन्होंने बीज को

सिंचन दिया व पल्लवित-पुष्पित किया और आज परमपूज्य गुरुदेव आचार्य महाश्रमणजी से सिंचन प्राप्त कर यह संगठन फल-फूल रहा है। यद्यपि TPF नवोदित संगठन है किन्तु इस संगठन ने थोड़े समय में धर्मसंघ में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। TPF का हर मेम्बर तेरापंथ धर्मसंघ का प्रबुद्ध सेनानी है। शक्ति-भक्ति की नई ऋचाएं लिखें। इस संगठन से सक्रियता से जुड़कर धर्मसंघ की सेवा दें। गण-गणपति की सेवा के लिए हर क्षण तैयार रहें। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा -

प्रबुद्ध वह होता है, जो समय के भाल पर सृजन के स्वस्तिक उकेरता है। समय की धरती पर अपने कर्तव्य के नए पदचिन्ह अंकित करता है। TPF अहमदाबाद के अध्यक्ष जागृत सकलेचा ने स्थापना-दिवस पर सबको शुभकामनाएं देते हुए धर्मसंघ में अधिकतम सेवा देने की बात कही। डॉ. धवल दोशी, डॉ. धीरज मरोठी, आईएसएस अधिकारी विजय कोठारी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। संचालन राजेश वडेरा ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री अभिषेक छाजेड़ ने किया।

## तेरापंथ युवक परिषद् का शपथ ग्रहण समारोह

### अहमदाबाद-उत्तर।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में नवनिर्मित मोटेरा के तेरापंथ भवन में अहमदाबाद-उत्तर तेरापंथ युवक परिषद् का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। यह गरिमामय कार्यक्रम अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, महामंत्री सौरभ पटवारी, मुकेश गुगलिया, आदि की उपस्थिति में आयोजित हुआ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने अपने महामंत्री के साथ मिलकर उत्तर तेयुप के नवमनोनीत अध्यक्ष दिलीप भंसाली को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा- सम्पूर्ण अध्यात्म जगत में हमारा तेरापंथ धर्मसंघ अलबेला है। अलबेला इसलिए कि यह संघ एक आचार्य के नेतृत्व में विकास के प्रांशु शिखरों पर आरोहण कर रही है।

संघ के आचार्य अपने श्रम से संघ को सिंचन देकर संघ की धरती पर गुलाब खिला रहे हैं एवं अपनी कृपा दृष्टि से खिलते गुलाबों में सौरभ का संचार कर रहे हैं। हमारे धर्मसंघ के खिलते गुलाबों में एक नाम है अ.भा. ते.यु.प. का।

अभातेयुप अपनी शाखा परिषदों के माध्यम से संघ में अपने कर्तृत्व के नए पद चिन्ह अंकित कर रही है। अहमदाबाद-उत्तर परिषद अभातेयुप की नवोदित परिषद है। भाई दिलीप भंसाली

इस परिषद के पहले अध्यक्ष बने हैं और उन्हें अपनी टीम के साथ चारित्रात्माओं की सन्निधि में राष्ट्रीय अध्यक्ष से शपथ ग्रहण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। साध्वी श्रीजी ने कहा - हमारे युवा साथियों की आंखों में संघ-विकास के सपने होने चाहिए। उनकी हर धड़कन में संघ एवं संघपति के प्रति श्रद्धा व समर्पण का नाद अनुगुंजित होना चाहिए। संघ-सेवा करने का जुनून होना चाहिए। हमने देखा उत्तर तेयुप की नई टीम में उत्साह व जोश है। साध्वी श्रीजी ने कहा - राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत प्रतिभा संपन्न, चिन्तनशील एवं कर्मठ हैं। पवन हवा की तरह गति करता हुआ अपनी शाखा परिषदों को उत्साहित कर रहा है। हर परिषद को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। हमने देखा पवन जो ठान लेता है, पूरा करके ही दिखलाता है। महामंत्री सौरभ सौम्य स्वभावी एवं नूतन चिंतन वाले हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने कहा- साध्वी अणिमाश्रीजी की सन्निधि में हमेशा ऊर्जा की अनुभूति होती है। साध्वी श्रीजी ने अपनी विशिष्ट शैली से अनेक कार्यकर्ताओं को तैयार किया है, उनमें एक नाम मेरा भी है। उत्तर तेयुप का आज शपथ ग्रहण हुआ है। उत्तर तेयुप के अध्यक्ष दिलीप अपनी टीम के साथ जबरदस्त कार्यक्रम करें। मंत्री विमल बाफना ने कार्यक्रम का संचालन किया। आभार ज्ञापन विशाल पिंचा ने किया।

## 'AI है तो मुमकिन है' नामक कार्यशाला का आयोजन

### कोयंबतूर।

'माइंडफुलनेस और सेल्फ हीलिंग एवं AI है तो मुमकिन है' नामक कार्यशाला युवती मंडल कोयंबतूर के लिए आयोजित की गई।

कार्यशाला का शुभारंभ मंत्री रेखा मरोठी के मंगलाचरण के द्वारा किया गया। तत्पश्चात साध्वी दीक्षाप्रभा जी ने इंटरनेट की जाल से बाहर निकल

कर लॉन्ग टर्म गोल्स पर फोकस करने की प्रेरणा दी और जीवन में अनावश्यक चीजों से ध्यान हटाकर महत्वपूर्ण चीजों पर अपना ध्यान केंद्रित करने की सीख दी।

साध्वी सिद्धप्रभा जी ने जीवन शैली के व्यवस्थित होने के लाभ बताये एवं जीवन में धर्म के महत्व को समझाया। साध्वी आस्थाप्रभा जी ने एक ही लाइन में अपनी भावना को समेटते हुए कहा

कि एक महिला में इतनी ताकत होती है कि वह पूरे परिवार को लाइन पर ला सकती है। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कन्या मंडल संयोजिका रुचिका मालु ने चैट GPT एवं gemini को सुलभ तरीके से जीवन में प्रयोग करने का तरीका समझाए। अंत में धन्यवाद ज्ञापन युवती मंडल संयोजिका बबीता गुनेचा ने दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन वंदना पारख ने किया।

## नूतन डेंटल यूनिट एवं नई मशीन का उद्घाटन

### पूर्वांचल कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल कोलकाता ATDC में नूतन डेंटल यूनिट एवं नई मशीन का उद्घाटन ATDC में किया गया। सर्वप्रथम

नमस्कार महामंत्र का जाप हमारे जैन संस्कारक विजय बरमेचा द्वारा किया गया। तत् पश्चात संपूर्ण जैन संस्कार विधि द्वारा नई डेंटल यूनिट का उद्घाटन का कार्यक्रम संपादित कराया और ATDC में आई नई इम्म्यूनोएसेस मशीन की जैन विधि द्वारा पूजा करवाई। कार्यक्रम में गरिमामय

उपस्थिति रही ATDC के परामर्शक रवि दुगड़, पूर्वाध्यक्ष रतन लाल श्यामसुखा, पूर्वाध्यक्ष एवं उद्घाटनकर्ता अलोक बरमेचा, विकास सिंघी, पूर्वाध्यक्ष नरेन्द्र छाजेड़, पूर्वांचल सभा के नवमनोनीत अध्यक्ष बिनोद दुगड़, पूर्वांचल महिला मंडल अध्यक्षा बबिता तातैड, नीतू बोथरा की उपस्थिति रही।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए। — आचार्य श्री महाश्रमण

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

## समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए  
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

<https://terapanthtimes.org/>

:: निवेदक ::



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

## संक्षिप्त खबर

### अणुव्रत समिति प्रतिनिधिमंडल ने की शिष्टाचार भेंट

चेन्नई। अणुव्रत समिति, चेन्नई के एक प्रतिनिधिमंडल ने पल्लावरम विधानसभा क्षेत्र की नवनिर्वाचित विधायक कामाक्षी जय कृष्णन से शिष्टाचार भेंट कर उन्हें निर्वाचन की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की। समिति अध्यक्ष सुभद्रा लुणावत ने विधायक का अणुव्रत दुपट्टा ओढ़ाकर अभिनंदन किया तथा उन्हें अणुव्रत आंदोलन एवं उसकी विभिन्न जनकल्याणकारी गतिविधियों की जानकारी दी। समिति मंत्री कुशल बाँठिया ने बताया कि अणुव्रत अभियान के अंतर्गत नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, नैतिक मूल्यों का संवर्धन, डिजिटल डिटॉक्स एवं जीवन विज्ञान जैसे विषयों पर निरंतर कार्य किया जाता है, विधायक ने भविष्य में अणुव्रत समिति, चेन्नई के साथ मिलकर अपने विधानसभा क्षेत्र में जनहित एवं नैतिक मूल्यों के प्रसार संबंधी कार्यक्रमों के संचालन का आश्वासन भी दिया।

## सेवा कार्यक्रम

साउथ हावड़ा। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के त्रिआयाम सेवा संस्कार संगठन जिसमें सेवा के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाहन करते हुए गर्मी के मौसम में शर्बत पिलाकर लोगों के मन एवं शरीर को राहत प्रदान करवाया। सेवा का यह कार्यक्रम क्षेत्र के बंगवासी मोड पर प्लैटिनम मॉल के सामने आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। अध्यक्ष आदेश चौरडिया ने सभी का स्वागत किया।

# संस्कार निर्माण शिविर का शुभारंभ

## साउथ कलकत्ता।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमारजी ठाणा-3 के सान्निध्य में साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा पंचदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर\* का आयोजन महावीर सेवा सदन, जोका में किया गया। पंचदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर के उद्घाटन सत्र में उपस्थित शिविरार्थियों व श्रोताओं को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - आज के भौतिक व आधुनिक युग में व्यक्ति का चिंतन तेजी के साथ बदल रहा है। ऐसी स्थिति में संस्कारों व संस्कृति के संरक्षण के लिए शिविरों की उपयोगिता निर्विवाद व असंदिग्ध है। जिस

प्रकार सुबह की शुरुआत मंगलमय होने से पूरा दिन मंगलमय होता है उसी प्रकार जीवन की शुरुआत बचपन संस्कारित होने से पूरा जीवन सुखमय बन जाता है। संस्कार जीवन-का पहला पाठ, संपदा व धरोहर है। जो संस्कार बचपन में आते हैं वह पचपन में नहीं आते हैं। संस्कार दो प्रकार के होते हैं- नैसर्गिक व अधिगमज। संस्कारों के निर्माण में पूर्वभाव, माता - पिता, मित्रों व गुरुजनों के संस्कार निमित्त होते हैं। शिविर में 'शि' का अर्थ शिक्षा, 'वि' का अर्थ विवेक व 'र' का अर्थ है रसमय बनना। अर्थात् शिविर में शिक्षा और विवेक को प्राप्त कर जीवन को रसमय व संस्कार मय बनाया जा सकता है। शिविर में भाग लेने वाले सभी बालक शिविर में अनुशासन, दिनचर्या, व्यवस्था के प्रति जागरूक

रहते हुए ज्ञान व संस्कारों का अर्जन करते रहें। धर्म के संस्कार जीवन को पवित्र व नैतिक बनाता है। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमारजी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण सदन के संस्थापक अध्यक्ष जसवंतसिंह मेहता ने दिया। साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के निवर्तमान अध्यक्ष बिनोद कुमार चोरडिया, महावीर सेवा सदन कि अध्यक्ष विजय सिंह चोरडिया, संस्कार निर्माण शिविर के प्रशिक्षक उपासक सुधांशु चण्डालिया, शिविर के राष्ट्रीय सह-संयोजक रवि छाजेड़, स्थानीय संयोजक नवीन दुगड़ ने शिविर के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

# व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

## इचलकरंजी।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि अनंतकुमारजी एवं मुनि जैनमकुमार जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् इचलकरंजी के द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला LIFE MANTRA - मैं क्या करूँ? आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ।

मुनि अनंतकुमारजी ने कार्यशाला में अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि हमारे जीवन के अनेक कोण होते हैं उन सब को मिलने पर हमारा संपूर्ण जीवन बनता है। जैसे हम देखते हैं कि भारत देश विभिन्न संस्कृति और अलग-अलग राज्यों से मिलकर बना वैसे ही हमारा

जीवन है। हम अपने जीवन में शारीरिक मानसिक व्यवसायिक पारिवारिक एवं आध्यात्मिक इन सब दृष्टि से श्रेष्ठ बनने का प्रयास करें यही इस कार्यशाला का उद्देश्य है। हम अपने जीवन में शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ बने सामाजिक दृष्टि से समाज एवं संघ के प्रति कुछ दे सकें, व्यावसायिक दृष्टि से स्वयं की बुद्धि एवं प्रज्ञा के द्वारा कुछ नया करके अपने व्यवसाय में निखार लाएं। पारिवारिक दृष्टि से हम रिश्तों को बचाते हुए मानसिक शांति के साथ अध्यात्म की ओर आगे बढ़े तब जाकर हमारा जीवन परिपूर्ण बन सकता है। इस कलयुग में हमें मानव जन्म मिला है जैन धर्म मिला है, तेरापंथ मिला है, आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महान गुरुओं का सान्निध्य मिला है तो हम अपने जीवन में

निखार लाने का प्रयास करें। मुनिश्री ने कार्यशाला में उपस्थित दंपतियों के लिए विशेष मंत्र जप आराधना करवाई और स्वयं का निरीक्षण के लिए अनेक प्रश्नों के माध्यम से स्वयं मूल्यांकन का एक बहुत ही रोचक मानक प्रस्तुत किया। लगभग 3 घंटे चली इस कार्यशाला में सब लोगों ने जागरूकता के साथ और मनोभाव के साथ स्वयं को जोड़ें रखा। मुनि जैनमकुमार जी ने मैं क्या करूँ? जिससे मेरा जीवन अच्छा बने श्रावकत्व में निखार आये इसके बारे में प्रेरणा दी। तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने उपस्थित संभागियों का स्वागत करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन तेरापंथ युवक परिषद् के मंत्री अंकुश बाफना ने किया।

# 'सर्वश्रेष्ठ किशोर मंडल' सम्मान से सम्मानित

## हैदराबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर के 21 वें किशोर मंडल अधिवेशन 'Gen-Z Conclave' में तेरापंथ किशोर मंडल, हैदराबाद को 'सर्वश्रेष्ठ किशोर मंडल' सम्मान प्राप्त हुआ।

इस उपलब्धि से सम्पूर्ण हैदराबाद तेरापंथ समाज में हर्ष एवं गौरव का वातावरण व्याप्त है। यह सम्मान मंडल

द्वारा पूरे वर्ष किए गए सतत प्रयासों, अनुशासन, संस्कार, सेवा गतिविधियों एवं उत्कृष्ट टीमवर्क का प्रतिफल है। राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त यह सम्मान मंडल की सक्रियता, रचनात्मकता एवं संगठन के प्रति समर्पण का परिचायक है। इस सफलता के पीछे 'युगप्रधान' आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी डॉ. गवेषणा श्री जी ठाणा-4 का विशेष मार्गदर्शन, स्नेहिल संरक्षण एवं संस्कार निर्माण का अमूल्य योगदान

रहा। उनके पावन सान्निध्य में किशोरों के व्यक्तित्व विकास, वैचारिक परिष्कार एवं सांस्कृतिक उन्नयन को नई दिशा प्राप्त हुई।

परिषद् अध्यक्ष राहुल गोलछा के मार्गदर्शन में टीकेएम प्रभारी अरिहंत गुजरानी, सह-प्रभारी प्रतीक बंबोली, संयोजक जय पिंचा, सह-संयोजक रुद्र बैद, रोनाक मेहेर के नेतृत्व में पूरी टीम ने योजनाबद्ध कार्यशैली एवं निरंतर सक्रियता के साथ कार्य किया,

## प्रज्ञा के अनुत्तर पुरुष - आचार्य महाप्रज्ञ

● मुनि मदन कुमार ●

आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रज्ञा पुरुष थे। वे जागृत चेतना के धनी थे। उन्होंने प्रज्ञा-जागरण के महान प्रयोग किये और प्रज्ञा के मंत्रदाता बन गये। उनका मानना था कि इन्द्रिय और मन के श्रम को न्यून कर अतीन्द्रिय चेतना और प्रज्ञा को जगाया जा सकता है। इसका तात्त्विक आधार यह है कि यह क्षयोपशम जन्य और साधनाजन्य है। प्रज्ञा की उपलब्धि मति ज्ञानावरण के विशिष्ट क्षयोपशम से होती है। उनकी उत्कृष्ट साधना से प्रभावित होकर आचार्य श्री तुलसी ने उन्हें महाप्रज्ञ अलंकरण प्रदान किया और वह अलंकरण ही उनका नामकरण हो गया।

मुनि श्री नथमल और आचार्य श्री महाप्रज्ञ - इन दो विशिष्ट नामों से वे विश्व में ख्यात-नामा हो गये। जीवन निरन्तर उत्कर्ष की ओर बढ़ता गया। उनके अंतिम दशक में की गयी अहिंसा यात्रा ने उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व को बहुत यशस्वी बना दिया। उनके जादुई प्रवचनों ने लोगों के दिल-दिमाग को आनंद से सराबोर कर दिया। वे हिन्दू और मुस्लिम समाज को देवदूत की तरह प्रतीत होने लगे। उनके विराट व्यक्तित्व से प्रभावित होकर स्वामी अवधेशानन्द गिरी ने लिखा - 'युगपुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञ दर्शनीय ही नहीं अपितु अत्यन्त महनीय भी थे। ऐसा लगा मानो भगवत्ता धरा पर आविर्भूत हुई है।' आचार्य श्री महाप्रज्ञ के विचारों की मुक्त कंठ से सराहना हुई है। मुझे एक योगी मिले थे। आध्यात्मिक संवाद चल रहा था। उन्होंने भाव विभोर स्वर में कहा - 'महावीर और महाप्रज्ञ इस धरा पर बार-बार जन्म नहीं लेते हैं।' मैं दिल्ली में श्री अटल बिहारी वाजपेयी

से बात कर रहा था। वे आचार्य श्री महाप्रज्ञ के साहित्य के अच्छे पाठक रहे हैं। वार्ता के दौरान उन्होंने भावुक होकर कहा - 'मैं आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य का लोहा मानता हूँ।' समस्या का समाधान देने वाला महामानव और महागुरु होता है।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार यशपाल जैन के शब्दों में - 'आचार्य श्री महाप्रज्ञजी विद्वान् थे पर उनमें विद्वत्ता का भार नहीं था।' वे यथावादी - तथाकारी थे। उनमें आवेश, अभिमान आदि निषेधात्मक भाव क्षीण-प्रायः हो चुके थे। जैसे वीतरागता आने पर ही केवलज्ञान प्रकट होता है वैसे ही उपशम की साधना होने पर ही विशिष्ट मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का प्रादुर्भाव होता है। उनके कुछ विचारों को यहां बिन्दु रूप में प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। राग होने पर द्वेष अवश्य होता है। व्यक्ति पहले वीतद्वेष बनता है और फिर वीतराग। इस तरह वीतरागता हमारा ध्येय बन जाता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने कहा कि राग और द्वेष में जन्य-जनक भाव है। तपस्या के बारह प्रकार हैं। उपवास से निर्जरा होती है, किंतु उपवास से जो निर्जरा होती है, उससे कहीं ज्यादा निर्जरा स्वाध्याय और ध्यान से होती है। सुख, शान्ति और सुविधा को भिन्न-भिन्न मानना चाहिये! वर्तमान युग सुख का नहीं, सुविधा का युग है। इस सुविधावादी युग में सुख की खोज की जा रही है, लेकिन मिल नहीं रहा है। कारण यही है कि ज्ञान और श्रद्धा का समन्वय नहीं है। श्रद्धा और ज्ञान-इन दोनों का योग है शान्ति। जहां शान्ति है, वहां सुख है और जहां सुख है, वहां शान्ति है।

## तप अनुमोदना कार्यक्रम आयोजित

मंडिया।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य मुनि विनीत कुमारजी, मुनि आकाश कुमारजी मुनि हितेंद्र कुमार जी मुनिश्री पुनीत कुमारजी के सान्निध्य में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम जो मुनि हितेंद्र कुमारजी के निर्विघ्न लगातार 3800 एकासन पूर्ण होने के पावन अवसर पर मंडिया में आयोजित किया गया मुनि श्री ने कहा तपस्या का जैन धर्म में विशिष्ट महत्व है एवं तेरापंथ धर्मसंघ में भी समय

समय पर अनेक तपस्याएं होती रही हैं। मुनि हितेंद्र कुमार जी ने तपस्या द्वारा अपनी आत्मा को बाधित किया है। तप अनुमोदना में भावाभिव्यक्ति दी एवं आगे भी तपस्या के द्वारा कर्म निर्जरा करते रहने का आशीर्वाद प्रेषित किया। इस सुअवसर पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, राजराजेश्वरी नगर के नवमनोनीत अध्यक्ष कमलसिंह दुगड़ ने समस्त संस्थाओं एवं श्रावक-श्राविका समाज, राजराजेश्वरी नगर की ओर से मुनिश्री के महान तप, त्याग एवं संयममयी साधना की भावपूर्ण अनुमोदना की गई।

## मुमुक्षु बहन का हुआ सम्मान

केजीएफ।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी आदी ठाणा-4 के सान्निध्य में मुमुक्षु बहन का स्वागत सम्मान हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहनों द्वारा सुंदर मंगलाचरण की प्रस्तुति से हुआ। स्वागत भाषण- सुमन बांठिया ने दिया। दीक्षार्थिनी बहिन सुमन बैद का परिचय कमलेश हिंगड़ ने दिया।

साध्वी संयमलताजी ने कहा- दीक्षा एक संकल्प है। दीक्षा एक आत्मशुद्धि

का त्यौहार है। सत्य, शिव, सुंदर का सोपान है दीक्षा। दीक्षा वेश परिवर्तन नहीं, हृदय परिवर्तन है। दीक्षा दिखावा नहीं, दर्शन है। प्रदर्शन नहीं, प्रयोग है। वैरागिन बहन के भीतर वैराग्य दीप को सदा प्रज्वलित रखना और आत्मदर्शन की दिशा में अपनी शक्ति का यथासंभव नियोजन करते हुए चतुर्मास संघ एवं संघपति की इंगित की आराधना करते रहें। आप सेवा, समर्पण, साधना के द्वारा अभीष्ट मंजिल को प्राप्त करें।

साध्वी मार्दवश्रीजी ने कुशल संचालन करते हुए कहा वीर व्यक्ति ही

संयम पथ का अनुसरण करता है। रत्नों को पहचानने के लिए अपनी इच्छाओं को गुरु चरणों में समर्पित करना चाहिए, जिससे हम व मोक्ष रूपी माला का वरण कर सकते हैं। दीक्षार्थिनी सुमन बैद ने कहा - 'जीवन में अंतिम मंजिल व मोक्ष को प्राप्त करने का सरल और सुगम उपाय दीक्षा है। चारित्र को पाना जीवन को सफल बनाना है। गुरु महातपस्वी के करकमलों से संयम को पाकर मैं शर्त सुख का अनुभव करूंगी। मंजू लुणिया ने संयमजीवन की शुभभावना व्यक्त की।

## विशेष साधना शिविर में कन्याओं ने सीखे गुरु

घाटकोपर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी निर्वाणश्रीजी के पावन सान्निध्य में स्थानीय महिलामंडल ने इस शिविर का समायोजन किया। उपस्थित कन्याओं को संबोधित करते हुए साध्वी निर्वाणश्रीजी ने ओजस्वी वाणी में कहा-जीवन में ज्ञान का मूल्य है। पर आचार की पवित्रता उससे भी अधिक मूल्यवान है।

जीवन में सदसंस्कारों की धरोहर को संजोकर विकास करे। द्वितीय सत्र में साध्वीश्री ने कन्याओं की जिज्ञासाओं का सटीक समाधान प्रस्तुत किया। शिविर का निर्देशन करते हुए डा. साध्वी योगक्षेमप्रभाजी ने प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान

किया। उन्होंने कहा- आज मुंबई के अनेक क्षेत्रों से कन्याएं यहां उपस्थित हैं। कन्याओं के सामने विकास के अनेक अवसर हैं तो चुनौतियां भी कम नहीं। सही वक्त पर सही निर्णय के साथ आगे बढ़ना है। साध्वी लावण्यप्रभाजी व साध्वी मधुरप्रभाजी ने प्रेरणा गीत के माध्यम से कन्याओं को आगे बढ़ने की सीख दी।

प्रेक्षा प्रशिक्षक अंजू बाफना ने कन्याओं को मोटिवेशनल टिप्स देते हुए ध्यान के प्रयोग करवाए। ते.म.मं. घाटकोपर की अध्यक्ष मंजू बडाला ने स्वागत भाषण में कहा- परिसीमन के पश्चात प्रथम बार इतनी कन्याओं को देखकर मैं भावविभोर हूँ। तेरापंथ कन्या मंडल की संयोजिका प्रेक्षा बाफना ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

## अनुष्ठान से मिलती है ऊर्जा

सायन कोलीवाड़ा।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कंचन प्रभाजी एवं शासनश्री साध्वी मंजूरेखाजी आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में एक विशेष अनुष्ठान सम्पन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता की।

कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि जप एवं अनुष्ठान के दौरान सायन कोलीवाड़ा के साधकों ने पूर्ण एकाग्रता एवं स्थिरता का परिचय दिया। सम्पूर्ण वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा, साधना और भक्ति से ओत-प्रोत हो गया। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी कंचन प्रभाजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि अनुष्ठान आत्मशुद्धि और ऊर्जा प्राप्ति का प्रभावी माध्यम है। अनुष्ठान के माध्यम से

व्यक्ति अपने भीतर सकारात्मकता, शांति और आत्मबल का विकास कर सकता है। शासनश्री साध्वी मंजूरेखाजी ने कहा कि अनुष्ठान से व्यक्ति के जीवन में नई चेतना और जागृति का संचार होता है। नियमित साधना और जप से प्रज्ञा का विकास होता है तथा मन की चंचलता पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है।

संतवाणी में यह भी बताया गया कि ऐसे अनुष्ठानों में अत्यंत गहन साधना होती है, जिससे बहुत बड़ी कर्म निर्जरा संभव होती है। यही कारण है कि अनुष्ठान व्यक्ति, परिवार और समाज में शांति एवं सद्भाव का आधार बनते हैं।

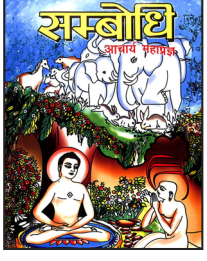
कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगल मंत्रोच्चार से हुआ तथा लोगस्स के पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह जानकारी तेयुप अध्यक्ष सुनिल दुगड़ ने दी।

## जीने की कला सिखाता है- धर्म

जयपुर।

कमला नेहरू नगर स्थित चौरड़िया में मंगल प्रवेश के उपरांत आयोजित धर्मसभा में मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' ने धर्म के वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'धर्म जीने की कला का नाम है। जिसके जीवन में धर्म का प्रवेश हो जाता है, वह जीवन को सही अर्थों में जीना सीख जाता है। विवेकयुक्त आचरण ही एक धार्मिक व्यक्ति की पहचान है। उन्होंने कहा कि धर्म मनुष्य को परिस्थितियों के बीच संतुलित रहने की शिक्षा देता है। जीवन में समता और सहनशीलता का भाव विकसित करना धर्म का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। आज शिक्षा के माध्यम से बौद्धिक विकास तो हो रहा है, लेकिन अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में शांत तथा संतुलित बने रहने का प्रशिक्षण धर्म और अध्यात्म ही प्रदान करते हैं। मुनि श्री ने कहा कि आवेश और आवेग पर नियंत्रण के अभाव में व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है। इसके पीछे सहिष्णुता की कमी एक प्रमुख कारण है। धर्म व्यक्ति के भीतर धैर्य, संयम और सहनशीलता के संस्कार विकसित कर जीवन को अधिक सार्थक और सुखमय बनाता है। इस अवसर पर मुनि संभव कुमार जी ने कहा कि धर्म हमारी आंतरिक और मूलभूत समस्याओं का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है। धर्म की साधना और उपासना के माध्यम से व्यक्ति अपनी अनियंत्रित वृत्तियों पर नियंत्रण करना सीखता है, जो सुख, शांति और आत्मिक संतोषपूर्ण जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

## संबोधि

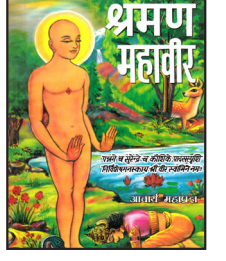


## परिशिष्ट



— आचार्यश्री महाप्रज्ञ

## श्रमण महावीर

मुक्त मानस :  
मुक्तद्वार

पूरक कर कुंभक करना। मूलबंध करना। मूलबंध से समस्त द्वारों का निरोध हो जाता है। उसके बाद ऐसा सोचना कि सुषुम्ना नाड़ी ऊपर बहती है। कुंभक द्वारा अवरुद्ध जो नाड़ियां और ग्रंथियां पहले अधोमुख थीं वे ऊर्ध्वमुख होकर विकसित होने लगती हैं।

## कुंभक के बाद दिव्यकरण करना—

1. दिव्य-जिह्वा को तालु में लगाएं, किन्तु एकदम संयोजित न करें-जीभ और तालु के मध्य कुछ अंतर रहे।
2. मुंह को थोड़ा सा खुला रखें। होठ दोनों एकदम न सटे।
3. दांत परस्पर मिले हुए न हो।
4. दृष्टि को, आंखों में जो 'कीकी' है, उस पर स्थिर करें।
5. शरीर सीधा रहे।

पूरक-कुंभक ऊर्ध्व-रेचन द्वारा धीरे-धीरे मंत्रोच्चार करना। इस उच्चारण के साथ-साथ कुंभित प्राण का धीरे-धीरे रेचन करना।

## आचार्यश्री महाप्रज्ञ जप के लिए इस प्रकार सुझाव देते हैं—

'जप के साथ चार बातें जुड़ी हुई हैं— पद, रंग, स्थान और श्वास की स्थिति।

हम 'णमो अरहंताणं' को लें। इसका वर्ण है श्वेत और स्थान है मस्तिष्क, सहस्रार चक्र। इस पद का उच्चारण करते समय मन सहस्रार चक्र में स्थित हो और श्वेत वर्ण का चिंतन हो, आभास हो। सहस्रार चक्र अर्थात् ब्रह्मरंध्र, तालु के ऊपर का भाग। हमारी स्थिति कुंभक की हो तो चारों बातें हो गयीं—

पद है— णमो अरहंताणं। रंग है-श्वेत।

स्थान है— सहस्रार चक्र। श्वास की स्थिति है कुंभक। अन्तर् कुंभक।

'णमो सिद्धाणं' को लें। इसका वर्ण है-लाल। इसका स्थान है-ललाट का मध्य भाग-आज्ञा चक्र। श्वास की स्थिति होगी-कुंभक।

'णमो आचरियाणं' यह तीसरा पद है। इसका रंग है पीला। इसका स्थान है-विशुद्ध चक्र, गला। यह पवित्रता का स्थान है, चक्र है। हमारी सारी भावनाओं और आवेगों पर नियंत्रण रखने वाला यही स्थान है। श्वास की स्थिति होगी अन्तर् कुंभक।

'णमो उवज्जायाणं' यह चौथा पद है। इसका रंग है नीला। इसका स्थान है-हृदय कमल। श्वास की स्थिति है-कुंभक।

'णमो लोए सव्वसाहूणं' यह पांचवां पद है। इसका रंग है कृष्ण-काला। इसका स्थान है पैरों का अंगूठा। श्वास की स्थिति है-कुंभक।

पांचों पदों में वर्ण भिन्न हैं, स्थान भिन्न हैं। श्वास की स्थिति पांचों में समान है। तो प्रत्येक के साथ पद, वर्ण, स्थान और श्वास की स्थिति चारों बातें जुड़ी हुई हैं। अब इसके साथ हमारे मन का पूरा योग रहना चाहिए। मन का योग होने से पांच बातें हो गईं। पांचों का विधिवत् योग होने से ही जप शक्तिशाली होता है। एक की भी कमी परिणाम में न्यूनता ला देती है।

नमस्कार स्वाध्याय में 'ॐ' के ध्यान के संबंध में इस प्रकार का उल्लेख प्राप्त होता है— 'ॐ ह्रीं नमः' 'ॐ' बीजाक्षरों में सम्राट् है। उसका सभी रंगों में पृथक् पृथक् कार्य के लिए ध्यान किया जा सकता है। शांति और निष्काम के लिए श्वेत वर्णमय 'ॐ ह्रीं नमः' का जप-ध्यान किया जाता है।

मुक्ति के लिए नासाग्र पर 'ॐ अर्हम' इन तीनों वर्षों का ध्यान करें। आचार्य कहते हैं—इस अद्भुत मंत्र से ध्यान की परम शुद्धि प्राप्त होती है, आत्मिक सुख तथा सिद्धजन्म अष्ट गुणों की भी।

यदि तू वस्तुतः संसार-दुःख के अग्निप से उद्विग्न है तो 'णमो अरहंताणं' इस सप्ताक्षर 'अर्हन्' नाम से उत्पन्न मंत्र का स्मरण कर। इस अनादि मंत्र से साधक सर्वज्ञ वैभव, विश्व विजय, मोक्ष और अर्हम के गुणों को उपलब्ध होते हैं।

(क्रमशः)

भगवान के सामने सारी बात रखकर बोले- 'भन्ते! क्या पावपत्तीय स्थविरों द्वारा प्रदत्त उत्तर सही है? क्या वे सही उत्तर देने में समर्थ हैं? क्या वे सम्यग्ज्ञानी हैं? क्या वे अभ्यासी और विशिष्ट ज्ञानी हैं?'

भगवान ने कहा— 'गौतम! पाश्चात्तीय स्थविरों द्वारा प्रदत्त उत्तर सही है। वे सही उत्तर देने में समर्थ हैं। मैं भी इन प्रश्नों का यही उत्तर देता हूँ।'

'भन्ते! ऐसे श्रमणों की उपासना से क्या लाभ होता है?'

'सत्य सुनने को मिलता है।'

'भन्ते! उससे क्या होता है?'

'ज्ञान होता है।'

'भन्ते! उससे क्या होता है?'

'विज्ञान होता है-सूक्ष्म पर्यायों का विवेक होता है।'

'भन्ते! उससे क्या होता है?'

'प्रत्याख्यान होता है-अनात्मा से आत्मा का पृथक्करण होता है।'

'भन्ते! उससे क्या होता है?'

'संयम होता है।'

'भन्ते! उससे क्या होता है?'

'अनाश्रव होता है- अनात्मा और आत्मा का संपर्क-सेतु टूट जाता है।'

'भन्ते! उससे क्या होता है?'

'तप करने की क्षमता विकसित होती है।'

'भन्ते! उससे क्या होता है?'

'पूर्व-संचित कर्म-मल क्षीण होते हैं।'

'भन्ते ! उससे क्या होता है?'

'चंचलता विच्छिन्न होती है।'

'भन्ते! उससे क्या होता है?'

'सिद्धि होती है।'

2. भगवान पार्श्व का धर्म-तीर्थ भगवान महावीर के धर्म-तीर्थ से भिन्न था। उनके श्रमण भगवान महावीर के श्रमणों से मतभेद भी रखते थे। समय-समय पर वे महावीर के सिद्धान्तों की आलोचना भी करते थे। फिर भी भगवान महावीर ने पार्श्व के श्रमणों के यथार्थ-बोध का मुक्तभाव से समर्थन किया।

उस समय श्रमण संघों का लोक-संग्रह की ओर झुकाव नगण्य था। उनकी सारी शक्ति आत्म-साधना तथा सत्य-शोध में लगती थी। इसीलिए उसमें साम्प्रदायिक आग्रह नहीं पनपा। जैन श्रमणों का लोक-संग्रह की ओर झुकाव बढ़ा तब एक नियम बना कि जैन श्रमण दूसरे श्रमणों या परिव्राजकों का सत्कार-सम्मान न करे। दूसरे का सत्कार-सम्मान करने से जैन उपासकों में श्रद्धा की शिथिलता आती है। वे जैन श्रमणों की अपेक्षा उन्हें अधिक पूजनीय मानने लग जाते हैं। अतः उपासकों की श्रद्धा को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए मुनि अन्यायी श्रमणों का सत्कार-सम्मान न करे।

भगवान महावीर के समय में यह नियम नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय व्यवहार काफी मुक्त था। भगवान ने गौतम से कहा- 'गौतम! आज तुम अपने पूर्वपरिचित मित्र से मिलोगे।'

'भन्ते ! वह कौन है?'

'उसका नाम स्कंदक है।'

'भन्ते! मैं उससे कब मिलूंगा?'

(क्रमशः)

## 3 बातें ज्ञान की

— आचार्यश्री महाश्रमण

तीन योग



3 बातें  
ज्ञान की  
आचार्य महाश्रमण



प्रश्न हो सकता है कि शुभ मनोयोग, शुभ वचनयोग, शुभ काययोग से लाभ क्या होता है? इससे दो लाभ होते हैं। पहला लाभ है-अशुभ कर्म टूटते हैं, निर्जरा होती है, आत्मा उज्ज्वल बनती है। दूसरा लाभ है-निर्जरा के साथ पुण्य का बंध होता है। जैसे साधु को वंदन करने से नीच गोत्र कर्म का क्षरण और उच्च गोत्र कर्म का बंधन होता है। शुभ योग से दो कार्य निष्पन्न हो गए-कर्मों की निर्जरा और साथ में पुण्य का बंध। इन दोनों में पहले कौन और बाद में कौन पर विचार करें तो पहले पुण्य का बंध होता है और बाद में निर्जरा होती है।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने एक बार फरमाया था कि ज्योंही शुभ योग होता है, निर्जरा और पुण्य दोनों काम एक साथ शुरू होते हैं, परन्तु पुण्य का बंध पहले संपन्न होता है और निर्जरा का काम बाद में संपन्न होता है, इसलिए पहले पुण्य, बाद में निर्जरा की बात कही गई है। शुभ योग से निर्जरा होती है, साथ में पुण्य का बंध होता है, यह एक स्वाभाविक-सी बात है। जैसे अनाज होता है, साथ में तूड़ी, भूसी भी होती है। इसी तरह निर्जरा होती है और साथ में पुण्य का बंध भी होता है।

आदमी अशुभ योग से बचने का प्रयास करे। असत् कल्पना न करे, असत् वाणी का प्रयोग न करे, असत् कायिक चेष्टा न करे। आदमी असत् से बचने का और शुभ योग में रहने का प्रयास करे। अगर यह ध्यान रहे कि हम अशुभ योग में न जाएं तो बहुत बड़ी साधना है। साधुत्व और है क्या? अशुभ योग का सेवन नहीं करना, यही मुख्यतः साधुत्व है।

योग अशुभ क्यों होता है? इसका मूल जिम्मेदार मोहनीय कर्म है। जब योग के साथ मोहनीय कर्म का संयोग हो जाता है तो योग अशुभ बन जाता है और जब मोहनीय कर्म का वियोग हो जाता है तो योग शुभ बन जाता है। योग को शुभ-अशुभ बनाने वाला मोहनीय कर्म होता है। जैसे वर्षा का पानी एक बाल्टी में एकत्रित किया। पानी अपने आपमें साफ है, शुद्ध है। आंधी आई और पानी गंदा हो गया। पानी तो शुद्ध था, रजकणों मिल गई तो पानी गंदा हो गया। अब वापस प्रक्रिया से रजकणों को दूर कर दिया जाए तो वह पानी वापस निर्मल हो जाता है। योग अपने आपमें ठीक है। मोह कर्म रूपी रजकणों मिलती हैं तो योग अशुभ बन जाता है। आदमी मोह कर्म को दूर रखने का प्रयास करे तो योग निर्मल रहेगा।

कुछ जीव एक योग वाले होते हैं, कुछ जीव दो योग वाले होते हैं, कुछ जीव तीन योग वाले होते हैं और कुछ मनुष्य योग-रहित यानी अयोगी होते हैं। अयोगी केवल मनुष्य ही हो सकता है। शेष सारे प्राणी योग-सहित होते हैं। पांच स्थावरकाय में एक योग होता है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय में दो योग होते हैं और संज्ञी पंचेन्द्रिय में तीनों योग होते हैं। एक योग होगा तो मात्र एक काययोग ही होगा। दो योग होंगे तो काययोग और वचनयोग ही होंगे। जहां तीनों योग होंगे, वहां मनोयोग जुड़ जाएगा। आदमी अपने योग त्रय को अशुभता से बचाने का प्रयास करे, यह साधना का महत्त्वपूर्ण सूत्र है।

## तीन कारण अल्प आयुष्य के

ठाणं में बताया गया है— तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा-पाणे अतिवात्तिता भवति, मुसं वड्ढता भवति, तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवति-इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पगरेंति । 3/17

तीन प्रकार से जीव अल्प आयुष्य कर्म का बंधन करते हैं-

1. जीवहिंसा से,
2. मृषावाद से,
3. तथारूप श्रमण माहन को अस्पर्शक तथा अनेषणीय अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य का प्रतिलाभ (दान) करने से।

इन तीन प्रकारों से जीव अल्प आयुष्य कर्म का बंधन करते हैं।

संसार में दीर्घ जीवन का महत्त्व होता है। वर्तमान में सौ वर्ष का पूर्ण आयुष्य माना गया है, किन्तु आदमी छोटी अवस्था में भी चला जाता है। अल्प आयुष्य के बंधन का पहला कारण है-प्राणियों की हिंसा करना। आदमी कई बार बिना मतलब प्राणी की हिंसा कर देता है। जैसे, चींटियां चल रही हैं। जानबूझकर उन पर पैर रख दिया, चींटियां मर गईं। यह बिना मतलब प्राणियों की हिंसा हो गई। एक कमरे में कोई कबूतर है। मनोरंजन के लिए कमरे के सारे दरवाजे और खिड़कियां बन्द कर दीं।

(क्रमशः)

# मंगल भावना समारोह एवं तप अनुमोदना आयोजित

मण्डिया।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार जी, मुनि आकाश कुमार जी, मुनि हितेंद्र कुमार जी, मुनि पुनीत कुमार जी के सान्निध्य में मंगल भावना समारोह एवं मुनि हितेंद्र कुमार जी के 3800 एकासन तप अनुमोदना का आयोजन तेरापंथ भवन के प्रांगण में आयोजित हुआ। मुनि विनीत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा तपसुर, धर्मसुर, कर्मसुर, तपसुर वह होता जो तप के द्वारा अपने कर्मों का श्रय करता है, धर्मसुर वह होता जो अपने धर्म के प्रति धृढ निश्चय से रहता है और कर्मसुर वह होता है जो अपने कर्म के द्वारा आत्म को पवित्र करता है।

तपस्या दिखावे के लिए नहीं की जाती है, तपस्या अपने कर्मों की निर्जरा हेतु की जाती है। अपने धर्म संघ में ऐसे अनेको साधु संत हुए हैं जो बड़े-बड़े तप कर धर्म संघ के प्रति धृढ रहे। मुनि हितेंद्र कुमार इनके 3800 एकासन जो आज संपन्न हुए हैं, इनको तप साथ-साथ रोज लंबा-लंबा विहार करना और गोचरी के लिए रोज 17,18 घंटों में जाना यह मेहनत का कार्य है। उनके प्रति यही मंगल कामना करते हैं यह अपनी आत्मा का विकास करते-करते धर्म संघ का विकास करते रहे। मुनि आकाश कुमार जी ने कहा सद्भावना तभी स्थापित हो सकती है, जब व्यक्ति के भीतर सत्य और ईमानदारी का भाव जागृत हो किसी भी जीव के प्रति वैर भाव न रखकर सभी के साथ मैत्रीपूर्ण

और सद्भावनापूर्ण व्यवहार करना। अहंकार, क्रोध और लोभ इन विकारों पर विजय प्राप्त कर शांति और क्षमा का भाव विकसित करना ही सच्ची सद्भावना है। मुनि श्री ने आगे कहा कि मुनि हितेंद्र कुमार ने अपने शरीर को तप से तपाते हुए जो श्रम कर रहे हैं, वह अद्भुत है। मुनि हितेंद्र कुमार के प्रति मंगल कामना की। मुनि हितेंद्र कुमार जी ने MANDYA एक ऐसा शब्द है जो अपने आप में हमारे जीवन की पुरी यात्रा और उसके वास्तविक उद्देश्य को समेटे हुए है। M मोक्ष, A अटैचमेंट, N नियम, D डिवोशन, Y योग A, आत्मा यदि हम नियम और योग को अपने जीवन में उतरे भक्ति (Devotion) से अपने हृदय को शुद्ध करें, और सांसारिक मोह (Attachment) को छोड़कर अपनी आत्मा को पहचाने, तो मोक्ष का मार्ग अपने आप आसान हो जाता है।

मण्डिया जो तपो भूमि के नाम से जानी जाती है आज मुनि हितेंद्र कुमार जी के 3800 एकासन तप की अनुमोदना में मण्डिया तेरापंथ समाज ने तप की अनुमोदना में 122 एकासन कर फिर से तपो भूमि को तपोमय बनादीया, मण्डिया के सभा अध्यक्ष सुरेश भंसाली, सभा मंत्री विनोद, युवक परिषद् अध्यक्ष कमलेश, महिला मंडल अध्यक्ष कमला, मंत्री सरला और टिम ने मुनि वृन्द के आगे की यात्रा मंगलमय हो ऐसी मंगलकामना करते हुए मुनि वृन्दों के प्रति कृतज्ञ व्यापित की। कार्यक्रम का संचालन प्रवीण दक ने किया।

## ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

केजीएफ, कर्णाटक।

तेरापंथ सभा भवन, KGF में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। साध्वी संयमलताजी ने ज्ञानशाला के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य तुलसी का यह महान उपक्रम ज्ञानशाला संस्कारों की फुलवारी है। जो समाज, देश और राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य है। साध्वीश्रीजी ने आगे कहा कि सुसंस्कार हमारे जीवन की धरोहर हैं, सफलता की चाबी हैं। स्वस्थ व्यक्ति और समाज निर्माण का सपना संस्कारों के साथ ही साकार होता है। बच्चों में संस्कारों की खाद, विनम्रता का विटामिन, अनुशासन का ओज, सहनशीलता की सीरप देकर उन्हें देश का उज्ज्वल भविष्य बनाती है ज्ञानशाला। साध्वीश्री ने

सत् संस्कारों को पल्लवित, पुष्पित करने के लिए ज्ञानार्थियों को जहां शाकाहार-मांसाहार भोजन साथ में होता है, वहां खाना नहीं खाने, यथासंभव नहीं जाने का संकल्प दिलवाया। हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को स्वस्थ, सुरक्षित रखने के लिए MOBILE TV का कम से कम उपयोग करने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वी रौनकप्रभाजी ने अथक श्रम कर बच्चों की सुंदर प्रस्तुति करवाई। बच्चों ने रोबोट और मूर्तियों द्वारा कर्म की THEORY पर रोबोटिक प्रस्तुति दी। (DIRECTION IS MORE IMPORTANT THAN SPEED) मस्ती की पाठशाला की रोचक प्रस्तुति हुई। बच्चों का कहना है की ज्ञानशाला से जुड़ने से हमारी दशा और दिशा ही बदल गयी है। इसलिये अगर बच्चों को सुसंस्कारी बनाना है तो अपने बच्चों को ज्ञानशाला अवश्य भेजे। सभी प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन कमलेश हिंमड ने किया।

# सभा एवं तेरापंथ युवक परिषद के समाचार

## दिल्ली

शालीमार बाग गोयल भवन में शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। जिसमें शालीमार सभा के अमित जैन एवं त्रिनगर सभा से राजकरण आंचलिया को पूर्व अध्यक्ष सज्जन गिड़िया एवं संजय जैन ने शपथ ग्रहण कराई। समारोह को संबोधित करते हुए शासन श्री साध्वी सुव्रताजी ने कहा - 'आगामी वर्ष आपके लिए स्वर्णिम वर्ष एवं ऐतिहासिक वर्ष होने वाला है। संघ का प्रत्येक सदस्य संघ सेवा के लिए एवं आचार्य प्रवर की सेवा के लिए कटिबद्ध रहे। चाहे संस्थाओं के पदाधिकारी हैं या सदस्य हैं। संघ हमारे लिए प्राण त्राण है, वरदान है। एक मछली के लिए जल का जितना महत्त्व है, एक फूल के लिए वृक्ष की डाली का जितना महत्त्व है, उतना ही महत्त्व हमारे लिए संघ का है। संघ से जुड़े हुए व्यक्ति विकास के पायदानों पर आरोहण कर सकते हैं। इस पुण्य प्रसंग पर शासन श्री साध्वी सुमन प्रभा जी ने प्रेरक वक्तव्य द्वारा एवं साध्वी चिन्तनप्रभाजी, साध्वी कार्तिकप्रभाजी ने मधुर स्वरों में संगान करके उद्बोधन प्रदान किया। इस आयोजन में तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड, चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री सुखराज सेठिया, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष विमल बेगानी, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष सज्जन गिड़िया ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशलता पूर्वक संचालन सभा के मंत्री अनिरुद्ध जैन ने किया।

## केजीएफ

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्या साध्वी संयमलताजी के सानिध्य में युवक परिषद के शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुवात केजीएफ युवक परिषद के द्वारा मंगलाचरण की सुंदर प्रस्तुति से हुआ। स्वागत भाषण संदीप बांठिया ने दिया। तेरापंथ युवक परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष संदीप बांठिया को ABTYP के संगठन मंत्री रोहित कोठारी ने शपथ दिलाई और पूरी टीम को बधाई दी। जैन संस्कारक कमलेश हिंगड़ व प्रभारी आलोक छाजेड़ ने मंत्रोच्चार के साथ शपथ ग्रहण एवं दायित्व बोध समारोह का समापन किया। KGF शाखा प्रभारी आलोक छाजेड़ ने कहा - 'KGF की परिषद भले छोटी हो पर एकता की शक्ति बड़ी होती है। आप एकता के

साथ 'Three C' Contribution, Connection एवं Consistency, इन तीन C को संगठन में अपनाएं जिससे आप विकास की ऊंचाइयों को छू सकते हैं।' नई टीम को मंगलकामना प्रेषित की। ABTYP के संगठन मंत्री रोहित कोठारी ने कहा - 'साध्वीश्रीजी ने TYP KGF का मानो योगक्षेम कर दिया है। आचार्य तुलसी ने युवक परिषद का गठन किया ताकि युवाशक्ति को सही दिशा, सही राह मिल सके। हमारे व्यक्तित्व को निखारने का यह अद्वितीय मंच है जो हम Life, Business and रिश्तों में भी उपयोगी सिद्ध होता है। अतः हम Resolution, Compromise, Sacrifice के साथ परिषद में नए चांद लगाएं।' मंगलकामना की। साध्वी संयमलताजी ने कहा - 'युवक राष्ट्र व समाज की वह ज्योति है जो अंधेरे को उजाले में बदल सकती है। युवा वह है जिसमें कर्तव्यबोध व पुरुषार्थ की चेतना जागृत है, जिसमें साहस, शक्ति, उत्साह व क्रांति का दीपक है। युवक में भरपूर शक्ति होती है, उसको सही दिशा देने का कार्य परिषद का मंच करता है। नई टीम खूब उत्साह, उमंग और जोश के साथ सबको लेकर नए-नए काम करती रहे। साध्वी मार्दवश्री जी ने कुशल संचालन करते हुए कहा - 'युवक में तूफानों से खेलने की शक्ति, चट्टानों को तोड़ने की शक्ति, अंधकार की परछाई को प्रकाशमय बनाने की शक्ति है।

## जयपुर

अणुविभा जयपुर केन्द्र में आयोजित साधारण सभा बैठक में तेरापंथ युवक परिषद जयपुर के सत्र 2026-27 हेतु श्री प्रवीण जैन को अध्यक्ष पद पर चुनाव अधिकारी प्रदीप डोसी निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया। इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष रवि छाजेड़ ने नव निर्वाचित अध्यक्ष प्रवीण जैन को दायित्व हस्तांतरित कर शुभकामनाएं दीं। अपने उद्बोधन में प्रवीण जैन ने कहा कि 55 वर्षों से परिषद सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रही है।

## पर्वत पाटीया

तेरापंथ युवक परिषद पर्वत पाटीया की नवमी वार्षिक साधारण सभा का आयोजन तेरापंथ भवन पर्वत पाटीया में अमित बुच्चा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। गत वर्ष की साधारण सभा की कार्यवाही का वाचन सहमंत्री दिपक

बैद ने किया। मंत्री अशोक कोचर ने सत्र 2025-26 में किये गये कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया व उन सभी कार्यों को डॉक्युमेंट्री फिल्म द्वारा समाज के सामने प्रस्तुत की एवं सभी कार्यकर्ताओं का श्लोक के माध्यम से धन्यवाद ज्ञापित किया। सत्र 2025-26 का आय व्यय का ब्यौरा कोषाध्यक्ष अजय राखेचा ने प्रस्तुत किया सदन ने ॐ अहंम की ध्वनि से पास किया। चुनाव अधिकारी संजय बोहरा ने अशोक कोचर को तेरापंथ युवक परिषद के सत्र 2026-27 के लिए अध्यक्ष पद के लिए घोषणा की। कार्यक्रम में महासभा कार्यसमिति सदस्य प्रदिप गंग सभा अध्यक्ष संजय बोहरा, मंत्री अनिल चौधरी आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रदीप जी पुगलिया ने किया।

## गांधीनगर, बेंगलूर

तेरापंथ युवक परिषद बेंगलूर (गांधीनगर) के 43वें वार्षिक साधारण सभा अध्यक्ष प्रसन्न धोका की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। प्रसन्न धोका ने पधारे हुए सभी सदस्यों का स्वागत किया। जितेन्द्र चोपड़ा ने आय व्यय की रिपोर्ट प्रस्तुत किया। प्रदीप चोपड़ा ने 2025-26 का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के संगठन मंत्री रोहित कोठारी की उपस्थिति में आयोजित निर्वाचन प्रक्रिया में तेरापंथ युवक परिषद बेंगलूर के सत्र 2026-27 के लिए चुनाव अधिकारी विनय बैद एवं सह चुनाव अधिकारी रजत बेद ने औपचारिक घोषणा करते हुए बताया कि सर्वसम्मति से विनोद कोठारी को तेरापंथ युवक परिषद बेंगलूर का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। संघ की गतिविधियों को नई गति प्रदान करने हेतु यह चयन महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। नव मनोनीत अध्यक्ष विनोद कोठारी ने सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। साधारण सभा का संचालन एवं आभार प्रदीप कुमार चोपड़ा ने किया।

## नागपुर

तेरापंथ युवक परिषद नागपुर की वार्षिक साधारण सभा एवं सम्मान समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में परिषद अध्यक्ष नितेश छाजेड़ की अध्यक्षता में किया गया। साधारण सभा की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण द्वारा की गई। सभी साथियों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। परिषद के अध्यक्ष नितेश छाजेड़ ने जैन

संस्कारक आनंदमल सेठिया, जतन मालू, उपस्थित सदस्यों, परामर्शक गणों एवं आमंत्रित सदस्यों का स्वागत किया। गत वार्षिक बैठक की कार्यवाही का वाचन तेरापंथ युवक परिषद मंत्री अंकुर बोरड़ ने किया जिसे सदन ने पारित किया। साथ में मंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। वर्ष पूर्व हुई विभिन्न क्रियाकलापों की जानकारी और कार्यों का उल्लेख सदन के सम्मुख प्रस्तुत किया। अमित जैन द्वारा साथियों को प्रेक्षाध्यान के महत्व एवं लाभों से अवगत करवाने के साथ-साथ स्वयं ध्यान का व्यावहारिक प्रयोग भी करवाया। कोषाध्यक्ष विनय आंचलिया ने खाता पत्रों को प्रस्तुत किया जिसे सदन द्वारा पारित किया। चुनाव अधिकारी प्रकाश डागा, मुकेश बुच्चा की कार्यवाही के लिए मंच सुपुर्द किया गया।

## कांदिवली, मुंबई

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' एवं साध्वी वृंद तथा समणी मंजुलप्रज्ञा जी व समणी मलयप्रज्ञा जी के पावन सान्निध्य में तेरापंथी सभा कांदिवली के शपथ ग्रहण समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी श्रीजी के नमस्कार महामंत्र संघान से की गई। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन निवर्तमान सभा अध्यक्ष ज्ञानमल भंडारी ने किया। साध्वी विद्यावतीजी ने अपने उद्बोधन में कहा- पद प्राप्त करना महत्त्व है, पद के अनुरूप जिम्मेदारी का सम्यक रूपेण निर्वहन करना उससे भी बड़ी बात है। अपनी कार्यक्षमता को उजागर करते हुए अध्यात्म की दिशा में गति प्रगति करते रहें।

साध्वी प्रियंवदाजी, साध्वी प्रेरणाश्रीजी, साध्वी मृदुयशाजी एवं साध्वी ऋद्धियशाजी ने तेरापंथ गीत का संगान किया। समणी द्वय ने अपने उद्गार व्यक्त कर नई टीम को शुभकामनाएं दी। शपथ ग्रहण के क्रम में निवर्तमान सभा अध्यक्ष ज्ञानमल भंडारी ने मिठालाल धाकड़ को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई तत्पश्चात अध्यक्ष मिठालाल ने अपनी टीम की घोषणा कर अपनी टीम को शपथ ग्रहण करवाई। अध्यक्ष मिठालाल धाकड़ ने अपने वक्तव्य में उपस्थित श्रावक समाज से कहा मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि कोई भी बड़ा लक्ष्य अकेले हासिल नहीं किया जा सकता ? संगठन की असली ताकत

हमारे कार्यकर्ताओं के आपसी सामंजस्य और समर्पण में है। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन तथा आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा मंत्री विनोद कोठारी ने किया।

## रायपुर

तेरापंथ युवक परिषद, रायपुर के वर्ष 2026-27 के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने पर आकाश बैद निर्वाचित हुए। मुख्य चुनाव अधिकारी कमल बैद एवं सह चुनाव अधिकारी कौशल गांधी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की गई। साथ ही अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद से पधारे पर्यवेक्षक गौतम जैन एवं अभिषेक जैन का भी विशेष आभार, जिन्होंने उड़ीसा से पधारकर चुनाव प्रक्रिया का मार्गदर्शन किया तथा संपूर्ण निर्वाचन को सुचारू एवं सफलतापूर्वक संपादित करवाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

## राजाराजेश्वरी नगर

तेरापंथ युवक परिषद राजाराजेश्वरी नगर बेंगलूर के 9वां वार्षिक अधिवेशन अध्यक्ष विक्रम महेर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। अध्यक्ष महोदय ने पधारे हुए सभी सदस्यों का स्वागत किया। कोषाध्यक्ष विनीत सेठिया ने आय व्यय की रिपोर्ट प्रस्तुत कि। मंत्री संदीप बैद ने 2025-26 का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के दिनेश मरोठी, डा.आलोक छाजेड़, कमलेश चोपड़ा, उपस्थिति रही। आयोजित निर्वाचन प्रक्रिया में तेरापंथ युवक परिषद बेंगलूर के सत्र 2026-27 के लिए चुनाव अधिकारी मनोज डागा एवं सहचुनाव अधिकारी सुशील भंसाली (छापर) औपचारिक घोषणा करते हुए बताया कि सर्वसहमति से सरल पटावारी को तेरापंथ राजाराजेश्वरी नगर का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। संघ की गतिविधियों को नई गति प्रदान करने हेतु यह चयन महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। नव मनोनीत अध्यक्ष सरल पटावारी ने सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की दृष्टि की आराधना करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ की गौरवशाली संस्था की परंपराओं को आगे बढ़ाने एवं अभातेयूप राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय पवन मांडोत के नेतृत्व में त्रिआयामी उद्देश्य सेवा, संस्कार और संगठन को लक्षित करते हुए सभी आयामों को संपादित करने के लिए संकल्पित है।

# आध्यात्मिक अभिनंदन समारोह का आयोजन

## चेन्नई

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के विद्वान सुशिष्य डॉ. मुनि पुलकितकुमार जी व नचिकेता मुनि आदित्यकुमार जी ठाणा 2 का चेन्नई महानगर सीमा मंगल प्रवेश के अवसर पर आध्यात्मिक स्वागत- अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन एचटीएल प्रांगण ने आयोजित हुआ। उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए डॉ. मुनि पुलकित कुमार ने कहा - संत जागृति का संदेश लेकर आते हैं। मुनि स्वयं जागृत रहता है और श्रावक समाज को भी जागृत रहने की पवित्र प्रेरणा देता है। समाज में आई हुई सुषुप्तता को हटाने के लिए संतों का आगमन होता है। मुनिश्री ने आगे कहा हम चेन्नई में धर्म जागृति की

प्रेरणा लेकर आए हैं।

चेन्नई सर्व श्रावक समाज में आध्यात्मिक आनंद कैसे बढ़े, यही हमारा लक्ष्य है। मुनिवर ने कहा इस भीषण गर्मी में भी पदयात्रा करते हुए हम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी की कृपा एवं आशीर्वाद से सातापूर्वक बेंगलुरु से चेन्नई पहुंच गए हैं।

चातुर्मास में एवं चातुर्मास से पूर्व चेन्नई श्रावक समाज के प्रत्येक घर में पगलिया एवं गोचरी तथा प्रवचन का लाभ देने का भाव है। मुनिवर ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि साहूकारपेट 'चातुर्मासिक धर्मोत्सव 2026' में सम्पूर्ण श्रावक समाज का स्वागत है।

इसके अंतर्गत आध्यात्मिक आनंद को बढ़ाने वाले विविध उत्सवों में सकल जैन समाज मिलकर, प्रत्येक

कार्यक्रम में उपस्थित रहने का प्रयास करे। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार ने गीत प्रस्तुत करते हुए युवा वर्ग को आध्यात्मिकता से जोड़ने के प्रेरणा प्रदान की। सभाध्यक्ष अशोक खतंग ने चेन्नई की धरा पर पधारे हुए मुनिद्वय एवं सभी महानुभावों का स्वागत-अभिनंदन किया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा चेन्नई के नव चयनित अध्यक्ष महेंद्र मांडोट, जैन महासंघ अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, महासभा के तमिलनाडु आंचलिक प्रभारी विमल चिप्पड़, तथा एचएफसीएल के प्रबंधक मनोज बैद ने महासभा अध्यक्ष महेंद्र नाहटा परिवार की ओर से मुनिवर का फैक्ट्री परिसर में पधारने पर स्वागत-अभिनंदन किया।

## पृष्ठ 1 का शेष

### कामनाएँ ही मानसिक...

२. सत्पुरुषार्थ कभी खाली नहीं जाता : कभी-कभी मेहनत का तुरंत फल न मिलने पर इंसान गुस्से में आ जाता है, परंतु अटूट विश्वास रखें कि सत्पुरुषार्थ का फल आज नहीं तो कल, और कल नहीं तो अगले जन्मों में अवश्य मिलता है।

३. न झुकना है, न मुड़ना है : आचार्यश्री भिक्षु के जीवन का स्मरण कराते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि स्वामी जी के सामने ढेरों विपरीत परिस्थितियाँ आईं, पर वे सत्य के मार्ग पर न कभी झुके और न कभी मुड़े। उनके जीवन से हर साधक और गृहस्थ को साहस व समता की प्रेरणा लेनी चाहिए कि कठिनाइयाँ चाहे कितनी भी आ जाएँ, आत्मसम्मान और धर्म के मार्ग

से पीछे नहीं हटना है।

मंगल देशना के संपन्न होने पर परम पूज्य आचार्य प्रवर ने सुधर्मा सभा में उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा आगम चर्या, संयम की सूक्ष्म मर्यादाओं और तत्व-ज्ञान को लेकर प्रस्तुत की गई विभिन्न गहन जिज्ञासाओं का सहजता से समाधान किया।

### बिना कैची-उस्तेर...

२. भँवरे जैसी माधुकरी वृत्ति : मुनि स्वयं भोजन नहीं बनाते, बल्कि भँवरे की तरह गृहस्थों के घरों में बने सहज शुद्ध आहार में से थोड़ा-थोड़ा अंश ग्रहण कर संयम यात्रा का निर्वाह करते हैं।

३. घोर ब्रह्मचर्य की साधना : शास्त्र में तीसरी सबसे कठिन बात

'घोर ब्रह्मचर्य महाव्रत' का पालन बताई गई है, जिसके प्रति पल-पल की चेतना और अकर्तव्य कार्यों से भीरुता रखना अनिवार्य है।

मुख्य मुनिश्री का उद्बोधन और योगक्षेम वर्ष का व्यवस्थित कैलेंडर: मंगल प्रवचन के क्रम में मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने संघ को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्यप्रवर की अनूठी दूरदृष्टि के कारण इस 'योगक्षेम वर्ष' का एक बेहद व्यवस्थित आध्यात्मिक कैलेंडर तैयार हुआ है। पूरे वर्ष के कार्यक्रम इसी के अनुसार संपादित हो रहे हैं, जिससे साधु-साध्वी वर्ग सहित पूरा श्रावक समाज वैचारिक रूप से भावित हो रहा है। प्रवचन के अंत में पूज्य प्रवर ने चारित्रात्माओं की सूक्ष्म जिज्ञासाओं का सहज समाधान किया।

## पृष्ठ 12 का शेष

### तीर भले चूक जाए...

जो मुनिवर जीवन भर के लिए इस कठिन अहिंसा की साधना करते हैं, वे धन्य हैं।

२. जागरूकता ही सबसे बड़ा कवच : मुनि जीवन में पाँचों समितियों (ईर्या, भाषा, एषणा आदि) और हर शारीरिक प्रवृत्ति में पल-पल की जागरूकता रखना अनिवार्य है, ताकि भाव अहिंसा अखंड बनी रहे।

गृहस्थों का कर्तव्य : साधु साधना में सहयोग और संकल्प व्रत- पूज्य प्रवर ने श्रावक वर्ग की सीमाओं को ध्यान में

रखते हुए आचरण का व्यावहारिक मार्ग बताया।

१. अपरिग्रही संतों का संबल बनें : गृहस्थों को यह चिंतन रखना चाहिए कि साधु पूर्ण रूप से अपरिग्रही और भिक्षाजीवी होते हैं। अतः श्रावकों को संतों की साधना में निर्विघ्न सहयोग के लिए शुद्ध वस्त्र, पात्र और औषधि आदि बहाराकर पुण्य अर्जन करना चाहिए।

२. संकल्प पूर्वक वध से बचें : गृहस्थ जीवन में चूल्हा जलाने या व्यापार (आरंभजा व प्रतिरोधुता हिंसा) से पूरी तरह बचना मुश्किल है; परंतु कम

से कम हर श्रावक को 'स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत' स्वीकार करना चाहिए। संकल्प पूर्वक, कषाय के वशीभूत या आवेश में आकर किसी भी बेजुबान प्राणी का वध न हो, यह हर गृहस्थ का अनिवार्य आचार होना चाहिए।

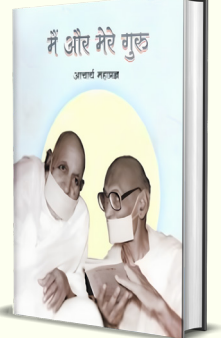
मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर आचार्यश्री ने सुधर्मा सभा में उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा संयम की सूक्ष्म मर्यादाओं, आगम चर्या और तत्व-ज्ञान को लेकर प्रस्तुत की गई विभिन्न गहन जिज्ञासाओं का सहजता से समाधान किया।

# बोलती किताब

## मैं और मेरे गुरु

आत्मकथा: जीवन का सबसे प्रामाणिक दस्तावेज

जीवन-वृत्त दो प्रकार से लिखा जाता है—एक, जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की जीवनी लिखता है और दूसरा, जब व्यक्ति स्वयं अपनी आत्मकथा लिखता है। साहित्य के क्षेत्र में दोनों विधाओं का अपना महत्त्व है, परंतु आत्मकथा अधिक प्रामाणिक मानी जाती है। इसमें लेखक अपने मनोभाव, संघर्ष, अंतर्द्वंद्व और जीवन के उन गुप्त प्रसंगों को भी व्यक्त कर सकता है, जिन्हें कोई दूसरा व्यक्ति पूर्ण रूप से नहीं जान सकता।



महात्मा गांधी जैसे अनेक महान व्यक्तियों ने अपनी आत्मकथा स्वयं लिखकर समाज को नई दिशा दी। इसी परंपरा में आचार्य तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। यद्यपि इसका अधिकांश भाग उनकी हस्तलिखित डायरियों, पत्रों और उपलब्ध दस्तावेजों के आधार पर तैयार किया गया, फिर भी इसमें उनके जीवन-दर्शन, तप, साधना और चिंतन की सजीव झलक मिलती है। यह आत्मकथा पाठकों को उनके व्यक्तित्व को निकट से समझने का अवसर प्रदान करती है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने भी आचार्य तुलसी की प्रेरणा से अपनी आत्मकथा लिखने का निर्णय लिया। उन्होंने इसका अधिकांश भाग स्वयं अपने मुखाखंड से डिक्टेडेशन देकर लिखवाया और अपने प्रवचनों, संवादों तथा जीवन-प्रसंगों को उसमें समाहित किया। उनका जीवन एक अप्रमत्त साधक, मौलिक चिंतक, कवि, साहित्यकार और अन्वेषक के रूप में अद्वितीय रहा।

यह आत्मकथा केवल एक महापुरुष के जीवन का वृत्तान्त नहीं, बल्कि पाठकों के लिए बोध, प्रेरणा और आत्मजागरण का माध्यम है। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी तथा मुनि धनंजयकुमारजी के श्रुतलेखन, संयोजन और संपादन ने इसे जन-जन तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह कृति हमें यह सिखाती है कि महान जीवन केवल जीया ही नहीं जाता, बल्कि उसे शब्दों में अमर भी बनाया जाता है।

<p>इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए अभी डाउनलोड करें सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप</p> <p>Readable &amp; Audible Mobile Application</p>	<p>पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें आदर्श साहित्य विभाग, जैन विश्व भारती लाडनू</p> <p>+91 87420 04849 books.jvbharati.org books@jvbharati.org</p>
--	--

# 'यूथ लीडर्स डायलॉग्स' में तेयुप की सहभागिता

## जयपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् एवं युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वाधान में तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर के द्वारा 'यूथ लीडर्स डायलॉग्स' भारत को स्टार्टअप कैपिटल ऑफ द वर्ल्ड बनाने की दिशा में एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. कॉलेज, रामबाग सर्कल, जयपुर में सेमिनार आयोजित किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर के अध्यक्ष रवि छाजेड़,

अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक हितेश भांडिया, प्रोफेसर डॉ. रेणू जोशी, डॉ देवेन्द्र व्यास, एस पी भटनागर सहित अनेक प्रबुद्धजनों ने विचार साझा करते हुये कहा कि इस संवाद श्रृंखला का उद्देश्य देश के युवाओं की राष्ट्र-निर्माण में सक्रिय भागीदार बनाना एवं उन्हें उद्यमिता के क्षेत्र में प्रेरित करना है। कार्यक्रम में भारत के प्रतिष्ठित उद्योगपतियों और स्टार्टअप विशेषज्ञों के बीच एक जीवंत पैनल चर्चा की गई, जिसके जरिये युवाओं को स्टार्टअप की दुनिया से रूबरू करवाया गया।

# ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का हुआ आयोजन

केजीएफ, कर्णाटक।

तेरापंथ सभा भवन, KGF में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। साध्वी संयमलताजी ने ज्ञानशाला के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'आचार्य तुलसी का यह महान उपक्रम ज्ञानशाला संस्कारों की फुलवारी है। जो समाज, देश और राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य है। साध्वीश्रीजी ने आगे कहा कि सुसंस्कार हमारे जीवन की धरोहर हैं, सफलता की चाबी हैं। स्वस्थ व्यक्ति और समाज निर्माण का सपना संस्कारों के साथ ही साकार होता है। बच्चों में संस्कारों की खाद, विनम्रता का विटामिन,

आचार्य तुलसी का यह महान उपक्रम ज्ञानशाला संस्कारों की फुलवारी है। जो समाज, देश और राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य है।

अनुशासन का ओज, सहनशीलता की सीरप देकर उन्हें देश का उज्ज्वल भविष्य बनाती है ज्ञानशाला। साध्वीश्री ने सत् संस्कारों को पल्लवित, पुष्पित करने के लिए ज्ञानार्थियों को जहां शाकाहार-मांसाहार भोजन साथ में होता है, वहां खाना नहीं खाने, यथासंभव नहीं जाने का संकल्प दिलवाया।

हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को

स्वस्थ, सुरक्षित रखने के लिए MOBILE TV का कम से कम उपयोग करने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वी रौनकप्रभाजी ने अथक श्रम कर बच्चों की सुंदर प्रस्तुति करवाई। बच्चों ने रोबोट और मूर्तियों द्वारा कर्म की THEORY पर रोबोटिक प्रस्तुति दी। (DIRECTION IS MORE IMPORTANT THAN SPEED) मस्ती की पाठशाला की रोचक प्रस्तुति हुई। नन्हे मुन्ने बच्चों ने नमस्कार मुद्रा व शनिवार सामायिक की महत्ता पर सुंदर प्रस्तुति देकर सबका मन मोह लिया। बच्चों का कहना है की ज्ञानशाला से जुड़ने से हमारी दशा और दिशा ही बदल गयी है। इसलिये अगर बच्चों को सुसंस्कारी बनाना है तो अपने बच्चों को ज्ञानशाला अवश्य भेजे। सभी प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन कमलेश हिंगड ने किया।

## स्व. साध्वी आशावती जी के प्रति पर हृदयोद्गार

● मुनि कमल कुमार ●

आशावती सती बनी, मन मजबूती धार  
तुलसी मुख संयम ग्रहण, धन्य उभय परिवार ॥१॥

चाँदकँवर जी साथ में, करती धर्म प्रचार  
उनकी सेवा अंत तक, की मन हर्ष अपार ॥२॥

अशाता वेदनीय को, सहन किया चिरकाल  
सेवा सतियों की सतत, पाकर हुई निहाल ॥३॥

महाश्रमण गुरुदेव की, करुणा अपरम्पार  
सेवा त्रिशला साध्वी की, सुगुरु कृपा अनुसार ॥४॥

गंगाणे के भक्त हैं, सजग सदा दिन रात  
आये हैं हम देखकर, शंका की क्या बात ॥५॥

स्मृति सभा में कर रहे, सतिवर के गुणगान  
कमल हृदय की भावना, शीघ्र वरें शिवस्थान ॥६॥

## श्रीउत्सव 'एक कदम स्वालंबन की ओर' का उद्घाटन

हैदराबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के दिशा निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद द्वारा आयोजित 'श्रीउत्सव - एक कदम स्वालंबन की ओर' का उद्घाटन तेरापंथ भवन डी वी कोलोनी सिकंदराबाद में हुआ। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र व मुनि दीप कुमार जी ठाणा 2 ने मंगलपाठ की कृपा करवाई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे जैन सेवा संघ के अध्यक्ष उमेश बागरेचा व विशेष उपस्थिति अमित मुणोत। यह दो दिवसीय प्रदर्शनी 12 व

13 जून रहेगी जहां पूरे देश भर से ज्वैलरी, डिजाइनर कपड़े, खूबसूरत होम डेकोर, ट्रेडी पर्स, लजीज खाने पीने आदि के विभिन्न स्टालों पर बेहतरीन कलैक्शन देखने को मिलेगा। अध्यक्ष नमिता सिंधी ने श्री उत्सव के उद्देश्य के बारे में बताया कि यह महिलाओं को स्वावलंबी बनाने हेतु महिलाओं द्वारा महिलाओं के लिए एक सशक्त कदम है जो देश विदेश में फैली अभातेमम की शाखाएं उठाती है, श्री उत्सव का आयोजन करती है। अभातेमम की चारों योजनाओं के बारे में अध्यक्षी जी ने विस्तार से जानकारी दी।

## संस्कार निर्माण शिविर समापन समारोह का आयोजन

साउथ कोलकाता।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में संस्कार निर्माण शिविर समापन समारोह का भव्य आयोजन साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा महावीर सेवा सदन में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में महासभा के महामंत्री विनोद बैद, न्यासी बाबूलाल बोथरा, शिविर के राष्ट्रीय संयोजक राजेश बाफना, महावीर सेवा सदन के संस्थापक अध्यक्ष जे.एस.

मेहता, अध्यक्ष विजय सिंह चोरडिया आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति विशेष रूप से उपस्थित थे। शिविर के मुख्य प्रशिक्षक उपासक सुधांशु चिंडालिया, प्रशिक्षक उपासक सुरेन्द्र सेठिया, उपासक संजय पारख थे। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा — जीवन में ज्योति पाने का अमोघ उपाय है - सुसंस्कार। सुसंस्कार से आत्मा परिमार्जित व संस्कारित होती है। संस्कार हमारे जीवन का धन व सुरक्षा कवच है। संस्कार हृदय की पुलकन व गुल की गुलशन है। सुसंस्कार आत्मा की खुराक

है। सुसंस्कारों के मक्खन से आत्मा को पौष्टिक भोजन मिलता है। बच्चे यहाँ से ग्रहण किये गये संस्कारों को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करते रहें। सही मायने में आज शिविर समापन नहीं अपितु शुभारंभ मानना चाहिए। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ शिविरार्थी बच्चों के मंगलाचरण से हुआ। स्थानीय शिविर संयोजक नवीन दुगड़ ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया। आभार ज्ञापन साउथ सभा के पूर्व मंत्री कमल कोचर ने किया। शिविर में कुल 51 शिविरार्थियों ने हिस्सा लिया।

## पृष्ठ 11 का शेष

काया तो बुढ़ापे से..

२. बुढ़ापे में समता की जरूरत : ढलती उम्र में इंसान को तमाम तरह की भौतिक लालसाओं, वासनाओं और अभिलाषाओं के जाल से बाहर निकलने का सचेत प्रयास करना चाहिए। वृद्धावस्था का समय केवल और केवल संयम, समता, साधना और आंतरिक शांति में व्यतीत होना चाहिए।

किंपाक फल जैसे हैं सांसारिक भोग: साधुत्व ही चिंतामणि - पूज्य प्रवर ने आगम गाथाओं के आलोक में भोगों के अंतिम विपाक (परिणाम) को स्पष्ट किया।

१. शुरुआत सुंदर, अंत प्राणांत : जैन आगमों में भोगों की तुलना 'किंपाक फल' से की गई है। किंपाक फल दिखने

में अत्यंत सुंदर, आकर्षक और खाने में बेहद स्वादिष्ट होता है, परंतु उसे चखने का अंतिम परिणाम साक्षात मौत (प्राणांत) होता है। ठीक इसी तरह, संसार के भोग तात्कालिक रूप से बहुत भले और सुखद लगते हैं, पर उनका अंतिम परिणाम आत्मा के लिए अत्यंत कड़वा और दुर्गति देने वाला होता है।

२. साधुत्व है चिंतामणि रत्न : जो जीव भोगों की इस क्षणभंगुरता को देखकर वैराग्य के पथ पर बढ़ जाता है और साधुत्व (दीक्षा) को अंगीकार कर लेता है, उसे मानो संसार का सबसे अमूल्य 'चिंतामणि रत्न' मिल जाता है। जीवन भर निष्कलंक साधु धर्म का पालन करना ब्रह्मांड की सबसे बड़ी उपलब्धि है। क्रोध, मान, माया और

लोभ रूपी कषायों को बाहर निकालकर मन को निर्मल और राग-द्वेष मुक्त करने से ही आत्मा के साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त होता है।

मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर आचार्यश्री ने सुधर्मा सभा में उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा आचार-चर्या, संयम की मर्यादा और तात्त्विक विषयों को लेकर प्रस्तुत की गई विभिन्न जिज्ञासाओं का सहजता से समाधान कर सबको कृतार्थ किया।

परलोक के अनजान रास्ते...

१. पूर्व जन्म की कमाई है वर्तमान सुख: आज गृहस्थ जीवन में हमें जो भी सुख-सुविधाएं और अनुकूलताएं मिली हुई हैं, वे हमारे किसी पूर्व जन्म की

60 वर्ष के बाद 'सुमंगल साधना' करना ही है असली धार्मिक कमाई - आचार्यश्री महाश्रमण

धार्मिक कमाई का ही फल है। अतः इस जीवन में आकर बैठ नहीं जाना है, बल्कि अगले जन्म की यात्रा को सुखमय बनाने के लिए धार्मिक कमाई का टिफिन अभी से पैक करना शुरू कर देना चाहिए।

२. ६० वर्ष के बाद सुमंगल साधना : गृहस्थों के लिए श्रावक

के 12 व्रतों का सम्यक् पालन, शुद्ध आचार और उत्तम विचार ही धर्म का असली टिफिन हैं। विशेष रूप से 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों के लिए 'सुमंगल साधना' का उपक्रम परलोक सुधारने का सबसे बड़ा संबल है। जीवन में जितनी ईमानदारी रहेगी, नशों से जितनी दूरी रहेगी और जितनी सेवा की भावना होगी, अगली गति उतनी ही पाथेय युक्त (सुखद) बनेगी।

मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर आचार्यश्री ने सुधर्मा सभा में उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा संघ मर्यादा, चर्या और आगम के गूढ़ रहस्यों के संदर्भ में प्रस्तुत की गई विभिन्न जिज्ञासाओं का सहज समाधान कर सबको कृतार्थ किया।

# काया तो बुढ़ापे से कमजोर हो गई, पर भीतर की सांसारिक तृष्णा आज भी अमर है : आचार्यश्री महाश्रमण

'भुक्त भोग का परिणाम कैसा?' विषय पर युगप्रधान की देशना;—इंसान भोगों को नहीं, भोग इंसान को भोग लेते हैं

लाडनू।

11 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, अखंड परिव्राजक, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'भुक्त भोग का परिणाम कैसा?' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से मर्मस्पर्शी पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री ने किंपाक फल और व्यावहारिक व्यसनो के उदाहरण देकर मानव चेतना को जागृत करते हुए भोगों से विरक्ति और आंतरिक निर्मलता का पाठ पढ़ाया।

**भोगों का भ्रम : हम भोगों को नहीं, भोग हमें भोगते हैं :** आचार्य प्रवर ने मनुष्य की वैचारिक अज्ञानता पर कड़ा प्रहार करते हुए मुख्य बिंदु



रेखांकित किए।

**१. व्यसन का चक्रव्यूह :** संसार में यह भ्रम है कि मनुष्य पदार्थों का उपभोग कर रहा है, पर कड़वा सच यह है कि पदार्थ मनुष्य को अपनी गिरफ्त में ले लेते हैं। जैसे शुरुआत में आदमी शौक से शराब पीता

दिवने में स्वादिष्ट पर परिणाम में प्राणघातक 'किंपाक फल' के समान हैं सांसारिक भोग  
-आचार्यश्री महाश्रमण

है या जरदा-गुटखा खाता है, पर बाद में वही शराब और गुटखा उस आदमी के जीवन, स्वास्थ्य और चेतना को पूरी तरह पीना व खाना शुरू कर देते हैं।

**२. ताप और तनाव से तप्त जीवन :** इंसान सोचता है कि वक्त बीत रहा है, पर असल में वक्त

नहीं, इंसान खुद बीत जाता है। बचपन और जवानी की शारीरिक क्षमताएं कब चली जाती हैं, पता ही नहीं चलता। मनुष्य जीवन भर प्रभु स्मरण या तपस्या तो नहीं करता, पर संसार के अवांछित मानसिक ताप और तनाव की भट्टी में खुद को जीवन भर तपाता रहता है।

**तृष्णा कभी बूढ़ी नहीं होती : अमर लालसा का सत्य—** शांतिदूत ने वृद्धावस्था के मनोवैज्ञानिक सच को उजागर करते हुए आत्म-निरीक्षण की सीख दी।

**१. जीर्ण शरीर, युवा आकांक्षाएं :** काल के प्रभाव से मनुष्य का शरीर तो जीर्ण-शीर्ण, कमजोर और बूढ़ा हो जाता है, परंतु उसके भीतर बैठी सांसारिक सुखों की तृष्णा कभी बूढ़ी नहीं होती; वह बुढ़ापे में भी उतनी ही जवान और बलवान बनी रहती है।

(शेष पेज 10 पर)

## परलोक के अनजान रास्ते पर धन की तिजोरी नहीं, सिर्फ 'धर्म का टिफिन' ही बचाएगा संकटों से : आचार्यश्री महाश्रमण

उत्तरज्झयणाणि आगम के आलोक में पुनर्जन्म के गूढ़ नियमों का विवेचन; श्रावकों को 12 व्रतों के सम्यक् पालन और नशा मुक्ति की दी सीख

लाडनू।

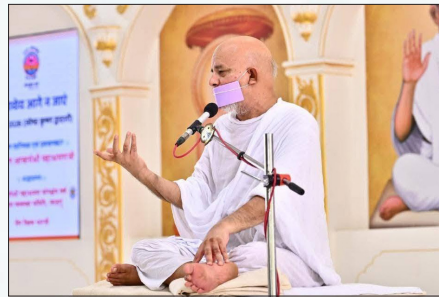
12 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, शांतिदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'अपाथेय आगे न जाए' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री ने पुनर्जन्म के अटल सिद्धांतों को रेखांकित करते हुए मानव जीवन को अगले जन्म की यात्रा के लिए समय रहते 'धार्मिक पुण्य का टिफिन' तैयार करने की मर्मस्पर्शी प्रेरणा दी।

**पुनर्जन्म का विज्ञान: सातवें गुणस्थान के बाद नहीं होता आयुष्य बंध—** आचार्य प्रवर ने जैन दर्शन के पुनर्जन्मवाद और कर्म सिद्धांतों का तात्विक विवेचन प्रस्तुत किया।

**१. पुनर्जन्म के शाश्वत नियम :** जैन वाङ्मय पुनर्जन्म को मजबूती से प्रतिपादित करता है। जीव अगले जन्म में कहाँ से आता है और मृत्यु के बाद कहाँ जाता है, इसके निश्चित नियम हैं।

**२. आयुष्य बंध की सीमा :** आगामी जन्म के लिए आयुष्य का बंधन आध्यात्मिक विकास के सातवें गुणस्थान के बाद नहीं होता है। यह प्रक्रिया सातवें गुणस्थान में प्रारंभ भी नहीं होती; बल्कि छठे गुणस्थान में शुरू होकर सातवें में समाप्त हो सकती है।



**साधु जीवन का पाथेय : सेवा भी है निर्जरा का महातप—** शांतिदूत ने चारित्रात्माओं को संयम पथ पर निरंतर गतिमान रहने और आध्यात्मिक कमाई बढ़ाने के निर्देश दिए।

**१. सेवा सापेक्ष संतों का संबल :** संघ में जो संत वृद्ध, बीमार या सेवा सापेक्ष (ग्लान) हैं, उन्हें अपने पास रखकर अहोभाव और विनय पूर्वक उनकी समुचित सेवा करनी चाहिए। पीड़ितों की सेवा करना साक्षात् कर्मों को खपाने (निर्जरा) का एक उत्कृष्ट तप है।

**२. आगम गाथाएं हों कंठस्थ :** साधकों को असंग और अनासक्त रहकर स्वाध्याय, ध्यान, समितियों और गुप्तियों में पूर्ण जागरूकता रखनी चाहिए। जितना संभव हो, ज्ञान को कंठस्थ करना चाहिए। विशेषकर 'उत्तराध्ययन सूत्र' और 'दशवैकालिक सूत्र' जैसी महान आगम वाणियां संतों को मुखजबानी याद होनी चाहिए।

**गृहस्थ जीवन की कमाई: ईमानदारी और सुमंगल साधना—** पूज्य प्रवर ने श्रावक वर्ग को वर्तमान सुखों का मूल कारण समझाते हुए भविष्य को सुधारने का मार्ग बताया।

(शेष पेज 10 पर)

## जीवन मल नाहटा मेमोरियल ट्रस्ट

दरियागंज, नई दिल्ली - 110002

### जीवन प्रगति प्रोत्साहन योजना 2026

#### < घोषणा >

**5 जून, 2026**

**जीवनमल जी नाहटा**  
(1932-2003)  
सरदारशहर - दिल्ली

पुरस्कार राशि  
**₹21,000/-**  
कक्षा 12वीं

पुरस्कार राशि  
**₹11,000/-**  
कक्षा 10वीं

SCAN TO APPLY

हमारे पूज्य श्री जीवनमल जी नाहटा की प्रेरणा से, ट्रस्ट पिछले कई वर्षों से विभिन्न शैक्षिक एवं सामाजिक कल्याणकारी गतिविधियों के माध्यम से समाज की सेवा और उत्थान के लिए समर्पित है। पिछले वर्ष हमने देशभर के विद्यार्थियों के लिए एक विशेष सम्मान एवं सहायता योजना का शुभारंभ किया था, जिसे अत्यंत उत्साहजनक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई और जिसके माध्यम से अनेक मेधावी विद्यार्थियों को लाभान्वित किया गया। इस योजना की सफलता तथा इसके सकारात्मक सामाजिक प्रभाव से प्रेरित होकर हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हम इस वर्ष पुनः इस योजना का शुभारंभ कर रहे हैं। इस पहल के अंतर्गत देश के विभिन्न राज्यों से ऐसे पात्र विद्यार्थियों को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाएगा जिन्होंने कक्षा 10वीं एवं 12वीं की परीक्षाओं में उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन किया है। इस प्रयास के माध्यम से हम प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने, उनकी उपलब्धियों को सम्मान देने तथा उन्हें अपने सपनों और लक्ष्यों को आत्मविश्वास एवं दृढ़ संकल्प के साथ प्राप्त करने हेतु प्रेरित करने की अपनी प्रतिबद्धता को आगे भी निरंतर बनाए रखने के लिए तैयार हैं।

**पात्रता मानदंड :**

- विद्यार्थी जैन "तेरापंथी" हों।
- शैक्षणिक वर्ष 2025-2026 में किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड जैसे CBSE, ICSE या राज्य बोर्ड से प्रथम प्रयास में कक्षा 10वीं या 12वीं उत्तीर्ण की हो।
- निम्नलिखित में से कोई एक शर्त पूर्ण होना आवश्यक है:
  - (क) पाँच विषयों में से कम से कम एक विषय में 100% अंक प्राप्त किए हों तथा कुल 95% या उससे अधिक अंक प्राप्त किए हों।
  - अथवा
  - (ख) पाँच विषयों में कुल मिलाकर 99% या उससे अधिक अंक प्राप्त किए हों।

**नियम एवं शर्तें :**

- आवेदनों पर सख्ती से "पहले आओ, पहले पाओ" के आधार पर विचार किया जाएगा।
- अपूर्ण आवेदन अस्वीकार कर दिए जाएंगे।
- आवेदक के कम से कम एक अभिभावक का तेरापंथ सभा का पंजीकृत एवं वैध सदस्य होना अनिवार्य है।
- ट्रस्ट प्राप्त आवेदनों की समीक्षा कर पात्रता एवं योग्यता के आधार पर चयन करेगा।
- चयनित विद्यार्थियों की पुरस्कार राशि सीधे उनके बैंक खाते में जमा की जाएगी।
- प्रमाण-पत्र चयनित आवेदकों के पंजीकृत डाक पते पर पृथक रूप से भेजे जाएंगे।
- किसी भी आवेदन को स्वीकार या अस्वीकार करने का अंतिम अधिकार ट्रस्ट के पास सुरक्षित रहेगा।
- आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 5<sup>th</sup> July, 2026, 5PM। इसके पश्चात किसी भी प्रकार का समय-विस्तार प्रदान नहीं किया जाएगा।
- पात्र विद्यार्थी व्हाट्सएप (QR) कोड स्कैन करके आवेदन प्रपत्र को सावधानी पूर्वक एवं बिना किसी त्रुटि के भरें।

**लक्ष्मी देवी नाहटा - मुख्य न्यासी**  
राज कुमार नाहटा : न्यासी      नरेंद्र नाहटा : न्यासी      हितेन्द्र नाहटा - न्यासी

सबको पढ़ाओ, सबको बढ़ाओ      जीवन प्रगति प्रोत्साहन योजना 2026

# तीर भले चूक जाए, पर बेजुबान को मारने की नीयत मात्र से लग जाता है 'भाव हिंसा' का महापाप : आचार्यश्री महाश्रमण

उत्तराध्ययन सूत्र के आलोक में श्रावकों को संदेश; गृहस्थों को संकल्प पूर्वक जीव वध के बचने और 'स्थूल प्राणातिपात व्रत' की दी सीख

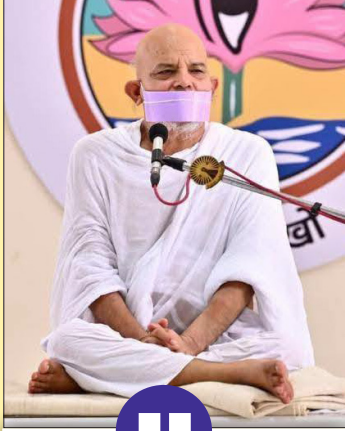
लाडनू।

13 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, तीर्थंकर महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'सब जीवों के प्रति समता' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से गहन तात्विक अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने जैन दर्शन के सबसे सूक्ष्म सिद्धांत—द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा के आपसी संबंधों को खोलते हुए समता और पूर्ण अहिंसा की साधना का पाठ पढ़ाया।

**हिंसा-अहिंसा का दार्शनिक गणित : कर्म बंध के ४ भंग :** आचार्य प्रवर ने शिकारी और मुनि के अद्भुत उदाहरणों से कर्म सिद्धांत के चार समीकरणों (भंगों) को स्पष्ट किया।

**१. केवल भाव हिंसा (द्रव्य हिंसा नहीं) :** एक शिकारी जंगल में शिकार के इरादे से निशाना साधकर तीर चलाता है, लेकिन निशाना चूक जाता है और जीव बच जाता है। यहाँ भले ही कोई जीव नहीं मरा (द्रव्य हिंसा नहीं हुई), लेकिन जीव को मारने की क्रूर नीयत के कारण शिकारी को 'भाव हिंसा' का पूरा पाप लग जाता है।



”

मर्यादा और जागरूकता के बाद भी अगर रास्ते में हो जाए कोई जीव हिंसा, तो समता भाव उसे बना देता है निष्पाप

-आचार्यश्री महाश्रमण

**२. केवल द्रव्य हिंसा (भाव हिंसा नहीं) :** एक जैन मुनि पूरे संयम और जागरूकता से चल रहे हैं, लेकिन अचानक तेज बारिश होने या अनिवार्य मार्ग में घास होने के कारण कच्चे पानी व वनस्पति के जीवों का स्पर्श हो जाता है।

यदि मुनि के मन में समता है और कोई बुरी नीयत नहीं है, तो यह केवल बाह्य 'द्रव्य हिंसा' है, 'भाव हिंसा' नहीं।

**३. द्रव्य और भाव दोनों हिंसा :** यदि शिकारी का निशाना सही लग जाता और जीव मर जाता, तो वहाँ बाह्य शरीर की हिंसा (द्रव्य) और भीतर के क्रूर भाव (भाव) दोनों प्रकार की महाहिंसा घटित हो जाती।

**४. संपूर्ण अहिंसा (न द्रव्य, न भाव) :** जब साधु पूर्ण जागरूकता से समितियों का पालन करते हुए चर्या करता है और कोई जीव नहीं मरता, वहाँ आत्मा पूरी तरह निष्पाप और अहिंसक होती है।

**समता और अहिंसा का अटूट रिश्ता :** जीवन सबको प्रिय है शांतिदूत ने सर्व प्राणातिपात विरमण महाव्रत की दुष्कर साधना को रेखांकित करते हुए मुख्य बिंदु समझाए।

**१. करुणा का आत्मवत् सिद्धांत :** हर जीव को अपने समान समझना ही समता है। इंसान को यह सोचे बिना कदम नहीं बढ़ाना चाहिए कि—'जैसे मुझे अपना जीवन प्रिय है, वैसे ही दुनिया के अन्य छोटे-बड़े जीवों को भी मरना अप्रिय और अत्यंत भयंकर लगता है।

(शेष पेज 9 पर)

अर्हम्

'शासनश्री' साध्वीश्री आशावती जी का देवलोकगमन



जीवन परिचय

<b>जन्म</b>	: मिगसर बदी सातम वि.सं. 1993 05 दिसम्बर 1936, नोखा मण्डी
<b>संसारिक नाम</b>	: अण्छी बाई
<b>पिता</b>	: श्रीमान बाघमलजी बैद
<b>माता</b>	: श्रीमती गवरा देवी बैद
<b>संसारपक्षीय भाई</b>	: घेवर चन्द बैद, मोती लाल जी बैद
<b>संसारिक पति</b>	: रावतमल भूरा पुत्र बन्नेचन्द भूरा
<b>दीक्षा</b>	: आषाढ सुदी पूनम वि.सं.2018, 29 जून 1960
<b>दीक्षा प्रदाता</b>	: आचार्य श्री तुलसी (साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के साथ में दीक्षित हुए)
<b>स्थान</b>	: केलवा
<b>देवलोकगमन</b>	: 12 जून, 2026, दोपहर 01:35 बजे शान्ति निकेतन सेवाकेन्द्र, गंगाशहर

## योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

